रजिस्ट्री सं० डी० एल०-33004/99 REGD. NO. D. L.-33004/99

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग III — खण्ड 4
PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 234] नई दिल्ली, सोमवार, दिसम्बर 24, 2007/पौष 3, 1929
No. 234] NEW DELHI, MONDAY, DECEMBER 24, 2007/PAUSA 3, 1929

भारतीय उपचर्या परिषद्

अधिसूचना

नई दिल्ली, 10 दिसम्बर, 2007

फा. सं. 11-1/2007-भा.उ.प.—भारतीय नर्सिंग परिषद् अधिनियम, 1947 (1947 का 48वां) के खण्ड 16 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारतीय उपचर्या परिषद् एतद्द्वारा निम्न विनियम बनाती है :–

1. **लघु शीर्ष तथा प्रवर्तन.**—इन विनियमों को प्रसूति-विद्या नर्स-कर्मी (पोस्ट बेसिक डिप्लोमा) कहा जाएगा।

2. ये विनियम मई 2003 से प्रभावी होंगे।

प्रसूति-विद्या नर्स-कर्मी

(पोस्ट बेसिक डिप्लोमा)

प्रस्तावना

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000 में मातृ और शिशु मृत्यु दर में कमी लाना एक ऐसा सामाजिक-जनसांख्यिकीय लक्ष्य है जिसे 2010[3] तक पूरा किया जाना है।

माताओं और शिशुओं की उत्तरजीविता गर्भावस्था के दौरान तथा और अधिक महत्वपूर्ण रूप से प्रसव के समय प्राप्त देखभाल और ध्यान के साथ गहरी जुड़ी हुई है। कुशल देखभाल की सुलभता के अभाव में रोगियों की देखभाल में लगने वाली देरी, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में मृत्यु का एक प्रमुख कारण होती है।

भारत में मातृ मृत्यु दर घटाने का अकेला सबसे महत्वपूर्ण तरीका यह सुनिश्चित करना होगा कि प्रत्येक प्रसव के समय एक कुशल स्वास्थ्य-कर्मी उपस्थित रहे। प्रसव के समय कुशल देखभाल महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि लाखों महिलाओं

और नवजात शिशुओं को प्रसव के दौरान या उसके तत्काल बाद गंभीर और ऐसी जटिलताएं पेश आती हैं जिनका पूर्वानुमान लगाना बहुत कठिन होता है । डाक्टरों अथवा नर्सों, जिन्हें प्रसूति विद्या के कौशल प्राप्त हैं जैसे कुशल स्वास्थ्य-कर्मी ऐसी जटिलताओं का पता लगा सकते हैं और उनका उपचार कर सकते हैं अथवा महिलाओं को यदि और अधिक कुशल देखभाल की जरूरत हो तो तत्काल स्वास्थ्य केन्द्रों अथवा अस्पतालों में भेज सकते हैं ।

प्रसूति विद्या में नर्स-कर्मी, महिलाओं के समूचे जीवन चक्र में, उनके जनन वर्षों और उनके नवजात शिशुओं की ओर विशेष ध्यान देते हुए उनके स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए जिम्मेदार है । वह महिलाओं को गर्भावस्था से पूर्व, गर्भावस्था के दौरान, प्रसव और प्रसव के उपरान्त देखभाल प्रदान करने और नवजात शिशु की देखभाल तथा अपने व्यवसाय की जिम्मेदारी और जबावदेही संभालने के लिए जिम्मेदार होगी । नर्स-कर्मी कुशल प्रसव परिचरों, सहायक नर्स दाइयों, नर्सों, डाक्टरों और विशेषज्ञों से युक्त मौजूदा परिधीय स्वास्थ्य प्रणाली के भीतर रहते हुए काम करेंगी और उसे ऐसे सुविधा स्थल पर नियुक्त किया जाएगा जहां कोई भी प्रसूति-विशेषज्ञ तैनात अथवा उपलब्ध नहीं है । प्रसूति विद्या में नर्स-कर्मी इसलिए तैयार की जाती हैं कि वह संस्थानगत और सामुदायिक स्तरों पर और अधिक सक्षम देखभाल प्रदान करने के लिए नर्स-कर्मियों के रूप में काम करने के वास्ते और अधिक संख्या में नर्सें तैयार करें ।

दर्शन

भारतीय उपचर्या परिषद ऐसा मानती है कि पंजीकृत नर्सों को नैदानिक और सामुदायिक स्थितियों में प्रसूति विद्या में नर्स-कर्मी के रूप में काम करने की जरूरत है जिससे कि वे माता और नवजात शिशु को सक्षम देखभाल प्रदान कर सकें। नर्सों की बढ़ती हुई भूमिकाओं और प्रौद्योगिकी में उन्नति के चलते और अधिक प्रशिक्षण की जरूरत है जिससे कि उन्हें प्रसूति विद्या संबंधी देखभाल में प्रभावी सहभागिता के लिए तैयार किया जाए ।

प्रयोजन

इस पाठ्यक्रम का प्रयोजन यह है कि नर्सों को निम्न क्रियाकलापों में प्रशिक्षित किया जाए :

1. माता और नवजात शिशु को उत्तम देखभाल प्रदान करना ।
2. देखभाल के तीनों स्तरों पर माता और नवजात शिशु की देखभाल और देखरेख करना ।
3. माता और नवजात देखभाल संबंधी क्षेत्रों में नर्सों, सम्बद्ध स्वास्थ्य-कर्मियों, अभिभावकों और समुदायों को शिक्षित करना ।
4. माता और नवजात देखभाल के क्षेत्रों में अनुसंधान करना ।

पाठ्यक्रम विवरण

यह पाठ्यक्रम इस ढंग से तैयार किया गया है कि पंजीकृत नर्सों (जीएनएम अथवा बी.एससी) को माता तथा नवजात को, उनके परिवारों और समुदायों को देखभाल के सभी तीनों स्तरों पर बढ़िया देखभाल प्रदान करने में विशेषज्ञतापूर्ण ज्ञान, कौशल और अभिवृति सहित प्रसूति विद्या में नर्स-कर्मियों के रूप में तैयार किया जा सके ।

प्रसूति विद्या में नर्स-कर्मी पाठयक्रम शुरू करने के लिए मार्ग-निर्देश

यह कार्यक्रम निम्न स्थानों पर शुरू किया जा सकता है-

(ए) उपचर्या में डिप्लोमा तथा डिग्री पाठयक्रमों की पेशकश करने वाले ऐसे सरकारी (राज्य/ केन्द्र/ स्वायत्तशासी) उपचर्या शिक्षण संस्थान जिनके साथ मातृ, नवजात और बाल रोग यूनिटों की मूल/ संबंधनप्राप्त सरकारी अस्पताल सुविधाएं मौजूद हों।

अथवा

(बी) उपचर्या में डिप्लोमा अथवा डिग्री कार्यक्रमों की पेशकश करने वाले ऐसे अन्य गैर-सरकारी उपचर्या शिक्षण संस्थान जिनके पास मातृ, नवजात और बाल रोग यूनिट से युक्त मूल अस्पताल सेवाएं उपलब्ध हों।

अथवा

(सी) निम्न सुविधाओं से युक्त 50 शय्याओं वाला अस्पताल:

- माता और नवजात यूनिट
- प्रतिवर्ष कम से कम 50 प्रसवों का रोगी भार
- स्तर दो की 8-10 शय्याएं
- स्तर तीन की नवजात शय्याओं के साथ संबंधन

मान्यता दिए जाने की क्रियाविधि

1. प्रसूति विद्या में नर्स-कर्मी पाठयक्रम शुरू करने के इच्छुक किसी भी संस्थान को राज्य सरकार से अनापत्ति/ अनिवार्यता प्रमाण-पत्र प्राप्त करना होगा। तथापि, जो संस्थान उपचर्या में डिप्लोमा/ डिग्री पाठयक्रम् आयोजित करने के लिए आई.एन.सी. द्वारा पहले से ही मान्यताप्राप्त हैं, उन्हें अनापत्ति/ अनिवार्यता प्रमाण पत्र प्राप्त करने से छूट प्राप्त है।
2. उपचर्या कार्यक्रम शुरू करने के संबंध में संस्थान का प्रस्ताव प्राप्त होने पर भारतीय उपचर्या परिषद कार्यक्रम शुरू करने के निमित्त अनुमति प्रदान करने के उद्देश्य से भौतिक आधारिक सुविधाओं, नैदानिक सुविधा तथा शिक्षण सुविधा के संबंध में उपयुक्तता का जायजा लेने के लिए संस्थान का निरीक्षण करेगी।
3. भारतीय उपचर्या परिषद से उपचर्या कार्यक्रम शुरू करने के लिए अनुमति प्राप्त होने के बाद संस्थान राज्य उपचर्या परिषद तथा परीक्षा बोर्ड/ विश्वविद्यालय से मंजूरी प्राप्त करेगा।

4. संस्थान केवल राज्य उपचर्या परिषद और परीक्षा बोर्ड/ विश्वविद्यालय से मंजूरी मिलने के बाद ही छात्रों का दाखिला करेगा।

5. भारतीय उपचर्या परिषद कार्यक्रम आयोजित करने की अनुमति को बढ़ाने के लिए लगातार दो वर्षों तक निरीक्षण करेगी।

स्टाफ-व्यवस्था

1. 1:5 के अनुपात में पूर्णकालिक शिक्षण संकाय।

अर्हता

- प्रसूति विज्ञान तथा स्त्रीरोगविज्ञान/ सामुदायिक/ बालचिकित्सा विशेषज्ञता सहित एम.एससी नर्सिंग।
- बी.एस नर्सिंग सहित प्रसूति विद्या में नर्स-कर्मी

अनुभवः कम से कम तीन वर्ष

2. **अतिथि संकायः** संबंधित विशेषज्ञताओं में बहु-विषयक्षेत्रीय

बजट

स्टाफ के वेतन, अंशकालिक अध्यापकों के लिए मानदेय, लिपिकीय सहायता, पुस्तकालय तथा कार्यक्रम के लिए आपातिक खर्च के वास्ते संस्थान के समग्र बजट में बजट प्रावधान किया जाना चाहिए।

भौतिक सुविधाएं

1. क्लासरूम - 1
2. उपचर्या प्रयोगशाला - 1
3. पुस्तकालय - सामयिक उपचर्या पाठय-पुस्तकें और प्रसूति विद्या, मातृ, नवजात, सामुदायिक स्वास्थ्य और बाल रोग उपचर्या, संदर्भ नियम पुस्तिकाओं सहित पत्रिकाएं (राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन)।
4. *अध्यापन सहायक सामग्री-* निम्न के प्रयोग के लिए सुविधाएं
   - ओवरहेड प्रोजेक्टर
   - स्लाइड प्रोजेक्टर
   - वीसीपी अथवा वीसीआर सहित टेलिविजन
   - एलसीडी प्रोजेक्टर
   - कम्प्यूटर
   - कौशलों के निदर्शन के लिए उपकरण (पुतले, रेसुसी शिशु, जो मॉडल, एमब्यूबैग तथा मास्क, देखभाल उपकरण आदि)

5. *कार्यालय सुविधाएं-*

- टाइपिस्ट, चपरासी, सफाई कर्मचारी की सेवाएं
- कार्यालय उपकरण और आपूर्ति के लिए सुविधाएं जैसे कि
  - लेखन सामग्री
  - प्रिंटर सहित कम्प्यूटर
  - जीरोक्स् मशीन/ रिसोग्राफ
  - टेलिफोन तथा फैक्स

नैदानिक सुविधाएं

शय्याओं की न्यूनतम संख्या- निम्न सुविधाओं से युक्त 50 शय्याओं वाला मूल अस्पताल

- मांता और नवजात यूनिट
- प्रतिवर्ष कम से कम 50 प्रसवों का रोगी भार
- स्तर दो की 8-10 नवजात यूनिट
- स्तर तीन की नवजात यूनिटों के साथ संबंधन
- ग्रामीण अस्पताल/ सीएचसी के साथ संबंधन

दाखिले की शर्तें और उपबंध

इस पाठयक्रम में दाखिले के इच्छुक छात्र को :

1. एक पंजीकृत नर्स अथवा एक पंजीकृत दाई (आरएन तथा आरएम) होना चाहिए
2. उसके पास स्टाफ नर्स के रूप में कम से कम एक वर्ष का अनुभव होना चाहिए।
3. अन्य देशों की नर्सों को दाखिले से पहले आईएनसी से समतुल्यता प्रमाण पत्र प्राप्त करना चाहिए।
4. शारीरिक रूप से स्वस्थ्य होना चाहिए।
5. सीटों की संख्या - प्रतिवर्ष कम से कम 50 प्रसवों के लिए 10 छात्र
   - प्रतिवर्ष कम से कम 100 प्रसवों के लिए 20 छात्र

पाठयक्रम की संरचना

(ए) अवधि : पाठयक्रम की अवधि एक शैक्षणिक वर्ष होगी।

(बी) पाठयक्रम का विभाजनः

1. अध्यापन : सिद्धान्त और नैदानिक अभ्यास	42 सप्ताह
2. स्थानबद्ध प्रशिक्षण	4 सप्ताह
3. परीक्षा (तैयारी सहित)	2 सप्ताह
4. अवकाश	2 सप्ताह
5. सावजनिक अवकाश	2 सप्ताह
	52 सप्ताह

(सी) पाठ्यक्रम के उद्देश्य

सामान्य उद्देश्य

पाठ्यक्रम की समाप्ति पर छात्र प्रसूति-विद्या और नवजात देखभाल से संबंधित दर्शन, सिद्धांतों, विधियों और मुद्दों, प्रबंध, शिक्षा और अनुसंधान की समझ विकसित करने की स्थिति में हो जाएंगे। इसके अलावा यह पाठ्यक्रम नर्स-कर्मियों को अन्य संबंधित स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं के सहयोग से मौजूदा परिधीय स्वास्थ्य प्रणाली के भीतर मातृ और नवजात देखभाल उपलब्ध कराने के लिए नर्स-कर्मी तैयार करेगा।

उद्देश्य

पाठ्यक्रम की समाप्ति पर छात्र इस योग्य हो सकेंगे कि:

1. मातृ और नवजात उपचर्या की अवधारणाएं और सिद्धांतों का वर्णन करना।
2. प्रसूति-विद्या में नर्स-कर्मी के लिए नैदानिक मार्ग-निर्देशों के अनुसार विविध उन्नत कौशलों का प्रयोग करते हुए देखभाल उपलब्ध कराना।
3. उन्नत प्रसूति विद्या और नवजात देखभाल उपलब्ध कराने में विश्लेषणात्मक निर्णय लेने के कौशलों का प्रयोग/ निदर्शन करना।
4. प्रसूति-विद्या और नवजात देखभाल में नर्स-कर्मी के लिए परिपाटी मानकों के अनुसार प्रसूति विद्या का व्यवसाय करना।
5. प्रसूति विद्या में नर्स-कर्मी के लिए नैतिक संहिता के प्रति प्रतिबद्धता का परिचय देना।
6. प्रभावी रूप से बातचीत करना और पारिवारिक संबंधों को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना।
7. मातृ और नवजात देखभाल के प्रबंध में कौशलों का आयोजन और निदर्शन।
8. व्यावसायिक निर्णय और कार्यों के लिए व्यावसायिक जिम्मेदारी और जबावदेही अंगीकार करना।
9. अन्य संबंधित स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं के सहयोग से प्रसूति-विद्या और नवजात देखभाल का व्यवसाय करना।
10. व्यक्तिगत और व्यावसायिक व्यक्तित्व के पोषण का साक्ष्य प्रस्तूत करना।
11. मातृ और नवजात देखभाल में अनुसंधान करना।
12. नर्सों और संबंद्ध स्वास्थ्य-कर्मियों को पढाना और उनकी देखरेख करना।

(डी) पाठ्यक्रम विवरण

	सिद्धांत	व्यावहारिक
1. नैदानिक उपचर्या- I (आधारिक पाठ्यकर्मों सहित)	90 घंटे	एकीकृत नैदानिक अभ्यास 1410 घंटे
2. नैदानिक उपचर्या- II	90 घंटे	
3. पर्यवेक्षण और प्रबंध, नैदानिक अध्यापन, प्रारंभिक अनुसंधान और सांख्यिकी		
(i) पर्यवेक्षण और प्रबंध	30 घंटे	
(ii) नैदानिक अध्यापन	30 घंटे	
(iii) प्रारंभिक अनुसंधान और सांख्यिकी	30 घंटे	
4. स्थानबद्ध प्रशिक्षण		160 घंटे
योग	**270 घंटे**	**570 घंटे**

- सिद्धांत और व्यवहार के लिए घंटों का विभाजन 42 सप्ताह X 40 घंटे/ सप्ताह = 1680 घंटे
- ब्लॉक कक्षाएं 04 सप्ताह X 40 घंटे/ सप्ताह = 160 घंटे
- एकीकृत सिद्धांत और नैदानिक अभ्यास 38 सप्ताह X 40 घंटे/ सप्ताह = 1520 घंटे
  - (सिद्धांत 270 घंटे)- सिद्धांत 4 घंटे/ सप्ताह 28 सप्ताह X 04 घंटे/ सप्ताह = 112 घंटे
  - नैदानिक अनुभव 34 घंटे/ सप्ताह 28 सप्ताह X 36 घंटे/ सप्ताह = 1008 घंटे

  10 सप्ताह X 40 घंटे/ सप्ताह = 400 घंटे
- स्थानबद्ध प्रशिक्षण 4 सप्ताह X 40 घंटे = 160 घंटे

ई. नैदानिक अनुभव

अर्जित नैदानिक अनुभव के क्षेत्र

***मातृ और नवजात देखभाल सेवाएं** **38 सप्ताह**

क्रम संख्या	यूनिट/ विभाग	सप्ताहों की संख्या
01	बन्ध्यता क्लिनिकों/ प्रजनन चिकित्सा, परिवार कल्याण और प्रसवोत्तर क्लिनिक/ पीटीसीटी केन्द्र सहित प्रसवपूर्व ओपीडी	6 सप्ताह
02	प्रसवपूर्व तथा प्रसवोत्तर वार्ड	4 सप्ताह
03	प्रसव कक्ष	8 सप्ताह
04	नवजात गहन देखभाल यूनिट	4 सप्ताह
05	प्रसूति/ स्त्रीरोगऑपरेशन थियेटर	4 सप्ताह
06	स्त्रीरोगवार्ड	2 सप्ताह
07	बालचिकित्सा ओपीडी/ पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों का क्लिनिक	2 सप्ताह
08	बालचिकित्सा वार्ड	2 सप्ताह
09	सीएचसी, पीएचसी, एससी	6 सप्ताह
	कुल प्रायोगिक घंटे	**38 सप्ताह (1410 घंटे)**
	स्थानबद्ध प्रशिक्षण	**समुदाय में 4 सप्ताह**

परीक्षा योजना

	आंतरिक मूल्यांकन अंक	बाह्य मूल्यांकन अंक	कुल अंक	अवधि (घंटों में)
ए. सिद्धांत				
प्रश्न पत्र- I नैदानिक उपचर्या- I	50	150	200	3
प्रश्न पत्र- II नैदानिक उपचर्या- II	50	150	200	3
प्रश्न पत्र- III पर्यवेक्षण तथा प्रबंध, नैदानिक शिक्षण, प्रारंभिक अनुसंधान और सांख्यिकी	50	150	200	3
बी. प्रायोगिक				
नैदानिक उपचर्या (शिक्षण तथा पर्यवेक्षण को मिला लिया जाए)	100	100	200	
सकल योग	**250**	**550**	**800**	

सी. परीक्षा में बैठने की शर्तें

छात्र :

1. वर्ष के दौरान प्रत्येक विषय में कम से कम 75% सैद्धांतिक शिक्षण घंटे उपस्थित रहा हो।
2. उसने कम से कम 75% नैदानिक प्रायोगिक घंटे काम किया हो। तथापि, छात्रों को प्रमाण पत्र प्रदान किए जाने से पहले घंटों और क्रियाकलापों के अर्थों में एकीकृत अभ्यास अनुभव और स्थानबद्ध प्रशिक्षण में उनकी 100% उपस्थिति रही हो।

परीक्षा

परीक्षा का आयोजन भारतीय उपचर्या परिषद द्वारा मान्यताप्राप्त राज्य उपचर्या पंजीकरण परिषद/ राज्य उपचर्या परीक्षा बोर्ड/ विश्वविद्यालय द्वारा किया जाएगा।

उतीर्ण होने के लिए मानक

1. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए यह जरूरी है कि छात्र ने सिद्धांत प्रायोगिक तथा प्रश्न-पत्रों में से प्रत्येक में आंतरिक मूल्यांकन और बाह्य मूल्यांकन में अलग-अलग कम से कम 50% अंक प्राप्त किए हों।
2. क) 60% से कम अंक प्राप्त होने पर द्वितीय श्रेणी,
   ख) 60% तथा इससे अधिक और 75% से कम अंक प्राप्त होने पर प्रथम श्रेणी,
   ग) 75% तथा इससे अधिक अंक प्राप्त होने पर डिस्टिंक्शन।
3. छात्रों को परीक्षा पास करने के लिए अधिक से अधिक तीन अवसर प्रदान किए जाएंगे।

प्र[illegible]न

ए. उपाधि-प्रसूति-विद्या में नर्स-कर्मी (पोस्ट बेसिक डिप्लोमा)

बी. यह डिप्लोमा निर्धारित अध्ययन कार्यक्रम के सफलतापूर्वक पूरा कर लेने पर प्रदान किया जाएगा जिसमें निम्न का वर्णन होगा

i) अभ्यर्थी ने प्रसूति-विद्या में नर्स-कर्मी का निर्धारित पाठ्यक्रम (पोस्ट बेसिक डिप्लोमा पूरा किया है)।

ii) अभ्यर्थी ने निर्धारित नैदानिक अनुभव पूरा किया है।

iii) अभ्यर्थी ने निर्धारित परीक्षा पास कर ली है।

पाठ्यचर्या

नैदानिक उपचर्या - I

(आधारिक पाठ्यक्रमों सहित)

विवरण

यह पाठ्यक्रम इस ढंग से तैयार किया गया है कि छात्र शहरी, ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में किशोरों, माताओं, नवजातों के लिए सेवाएं उपलब्ध कराने के संबंध में ज्ञान और कौशलों सहित संबंधित जीववैज्ञानिक और व्यवहारपरक विज्ञानों से संबंधित सिद्धांतों की समझ विकसित कर सकें और इस प्रकार मातृ तथा शिशु मृत्यु और रुग्णता के जोखिम में कमी ला सकें।

उद्देश्य

पाठ्यक्रम के पूरा कर लेने पर छात्र निम्न कार्यों में सक्षम हो जाएंगे

1. मातृ और नवजात स्वास्थ्य के जानपदिकरोगविज्ञान को समझाना।
2. राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के घटकों का वर्णन करना।
3. विभिन्न स्तरों पर स्वास्थ्य प्रणाली के संगठनात्मक ढाँचे को स्पष्ट करना।
4. प्रसूति विद्या में नर्स-कर्मियों के कार्यों की सूची बनाना।
5. प्रणाली में अन्य संबंधित स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं, अनौपचारिक स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं तथा चिकित्सा की अन्य प्रणालियों के व्यावसायिकों के साथ कारगर ढंग से सहयोग स्थापित करना।
6. जिन महिलाओं/ नवजातों को उन्नत देखभाल की जरूरत है उन्हें उपचार के लिए आगे भेजना तथा प्रसूति-विद्या में नर्स-कर्मी को भेजे गए रोगियों के बारे में फीडबैक प्रदान करना।
7. महिला और उसके परिवार के साथ प्रभावी भागीदारी विकसित करना।
8. देखभाल प्राप्त करने में महिलाओं पर लैंगिक विषमताओं के प्रभाव को पहचानना और महिलाओं को सामर्थ्यवान बनाना।
9. महिला, परिवार और समुदाय को विभिन्न प्रजनन स्वास्थ्य मुद्दों के बारे में शिक्षित करना।
10. प्रोटोकोल के अनुसार दवाइयां लिखते समय फार्माकोलॉजी के सामान्य सिद्धांत लागू करना।

11. शुद्ध और पूरे रिकॉर्ड रखने तथा नियमित रिपोर्ट भेजने और रिपोर्टों की समीक्षा करके कार्रवाई करने के महत्व को पहचानना।
12. कारगर संक्रमण नियंत्रण उपाय लागू करना।
13. किशोरों, दम्पतियों और परिवार को प्रजनन स्वास्थ्य के बारे में परामर्श देना।
14. सामुदायिक शिक्षा को सुविधाजनक बनाना।
15. महिलाओं और परिवार के लिए प्रसवपूर्व देखभाल का महत्व समझाना।
16. निष्पादन करें, रिकॉर्ड करें और इतिवृत्त, शारीरिक जांच और प्रयोगशाला प्रशिक्षणों के निष्कर्षों के महत्व की व्याख्या करें जिससे कि इस बात का जायजा लिया जा सके कि नैदानिक निर्णय लेने की प्रक्रिया सामान्य (अनौपचारिक) रही है अथवा उससे विचलन हुआ है।
17. पार्टोग्राफ का प्रयोग करते हुए प्रसव की प्रगति का मॉनीटरन, जिससे कि मातृ और भ्रूण की स्थिति का पता लगाया जा सके।
18. महिलाओं की गर्भावस्था, प्रसव तथा प्रसवोत्तर अवधि के दौरान और नवजातों की देखभाल की व्यवस्था।

सिद्धांत = 90 घंटे

यूनिट	घंटे	विवरण
1	10	**परिचय:** ■ ऐतिहासिक तथा समकालीन परीप्रेक्ष्य ■ मातृ और नवजात स्वास्थ्य के जानपदिकरोगवैज्ञानिक पक्ष ■ मातृ और नवजात स्वास्थ्य समस्याओं का आकार ■ मातृ और नवजात स्वास्थ्य के मुद्दे : आयु, लिंग, लैंगिकता, मनोसामाजिक सांस्कृतिक तत्व, लैंगिक विषमताएं। ■ महिलाओं का सशक्तीकरण ■ निवारणात्मक प्रसूति-विज्ञान ■ मातृ और बाल स्वास्थ्य से संबंधित राष्ट्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कार्यक्रम ■ राष्ट्रीय ग्रामीण स्वांस्थ्य मिशन ■ प्रसूति-विद्या व्यवसाय में लागू सिद्धांत, मॉडल और दृष्टिकोण ■ स्वास्थ्य देखभाल आपूर्ति प्रणाली : एमसीएच के संदर्भ में राष्ट्रीय, राज्य, जिला और ग्राम स्तर ■ प्रसूति-विद्या में नर्स-कर्मी की भूमिका और क्षेत्रः कार्य विवरण ■ एनजीओ की भूमिका ■ वैकल्पिक चिकित्सा प्रणालियों सहित स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं के साथ सहयोग
2	2	**रैफरल प्रणाली की श्रृखंला** ■ अन्य स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं की सीमाएं और समभावनाएं ■ रैफरल के लिए नीति और प्रोटोकॉल; कार्यनितियों की श्रेणी ■ ऐसी स्थितियां जिनमें महिलाओं और नवजातों को रैफरल जरूरी होता है, कब रैफर करें, किस स्थिति के लिए कहां रैफर करें, कैसे रैफर करें, परिवहन व्यवस्था : सामुदायिक संसाधन, परिवारों को सलाह और रैफरल टिप्पणी ■ अनुवर्ती कार्रवाईः कर्मी को भेजे गए मामलों पर फीडबैक रिकार्ड और रिपोर्टें
3	5	**संचार** ■ प्रभावी संचारः कोटियां और तकनीक ■ अन्तरवैयक्तिक संबंध, व्यक्ति, समुदाय ■ अन्तरवैयक्तिक संचार, अन्तरवैयक्तिक संचार में कदम, एक उत्तम अन्तरवैयक्तिक संचार प्रणाली की विशेषताएं

		▪ श्रोताओं का समूहन/ स्तरीकरण ▪ व्यवहारपरक बदलाव संचार (आईईसी) ▪ स्वास्थ्य शिक्षा ▪ जन संचार
4	20	**फार्माकोलॉजी** ▪ प्रसूति-विद्या तथा प्रसूति-विद्या व्यवसाय और नवजात देखभाल में प्रयुक्त दवाईयां : कार्रवाई, खुराक, प्रभाव, आनुषंगी प्रभाव तथा रिकॉर्डिंग, महिला के लिए सलाह (दवाइयां लेते समय विशेष सावधानियों सहित) ▪ दवाइयां लिखने (मामला अध्ययनों का प्रयोग करते हुए) से संबंधित गलत परीपाटियों के प्रभाव ▪ औषधियों का भंडारण, औषधियों का संभारतंत्रीय प्रबंध (अधिप्राप्ति और आपूर्ति, स्टॉक खाली होने की स्थिति से बचाव) o प्रोटोकॉलों (स्थायी आदेश) के अनुसार औषधियां लिखना o नैदानिक मार्ग-निर्देशों के अनुसार क्रियाविधियां करना o प्रलेखन : शुद्ध और पूरे रिकॉर्ड
5	3	**रिकॉर्ड और रिपोर्ट** ▪ रखे जाने वाले रिकॉर्ड ▪ महत्वपूर्ण आंकड़े ▪ कानूनी प्रभावों सहित पूरे और सही रिकॉर्ड रखने का महत्व ▪ रिकॉर्ड भंडारण प्रणालियां ▪ रिकॉर्डों की पुनःप्राप्ति ▪ रिपोर्ट भेजने के प्रपत्र तथा यथानिर्धारित नियमित रिपोर्टें भेजने का महत्व, पिछले वर्षों/ तिमाहियों आदि के साथ तुलना सहित रिपोर्टों की समीक्षा सेवाओं में सुधार लाने के निमित कार्रवाई करने के लिए रिकॉर्डों और रिपोर्टों का प्रयोग ▪ ई-रिकॉर्ड ▪ सीएचसी रिकॉर्डों और रिपोर्ट प्रपत्रों की जांच
6	5	**संक्रमण नियंत्रण** ▪ राष्ट्रीय मार्ग-निर्देश और संस्थानगत नीति ▪ मानक सुरक्षोपाय तथा जैवचिकित्सिय अपशिष्ट प्रबंध ▪ संक्रमण निवारण के लिए विशिष्ट तकनीक; उपकरणों का विसंक्रमण/ जीवाणुनाषन; • सतहों को सही ढंग से साफ करना, प्रयुक्त और संदूषित सामग्री का निपटान

		▪ रुधिर और उत्तक ▪ सुइयों को संभालना ▪ संक्रमण निवारण कार्यनीतियों के कार्यान्वयन का मॉनीटरन; सुइयों के चुभने से लगने वाली चोटों की देखभाल ▪ सुरक्षात्मक वैयक्तिक उपकरण
7	10	**किशोर स्वास्थ्य** ▪ वृद्धि और विकास ▪ सामाजिक और सांस्कृतिक परीपाटियां ▪ मानवीय कामुकता ▪ किशोरावस्था की समस्याएं; शरीरवैज्ञानिक तथा हार्मोनल परिवर्तन ▪ यौन शिक्षाः मासिक धर्म स्वच्छता, सुरक्षित यौन परिपाटियां, गर्भनिरोधक ▪ चुनिंदा प्रजनन स्वास्थ्य समस्याओं की देखभालः अरक्तता, पोषणिक न्यूनताएं तथा मासिक धर्म संबंधी समस्याएं
8	5	**परामर्श** ▪ एक उत्तम परामर्शदाता के सिद्धांत, कोटियां, तकनीक, विशेषताएं; परामर्श संबंधी विशेष मुद्दे
9	5	**शरीररचनाविज्ञान और शरीरविज्ञान की समीक्षा** ▪ मानवीय प्रजनन प्रणाली : पुरुष और महिला के शरीररचनाविज्ञान और शरीरविज्ञान की समीक्षा ▪ हार्मोनल चक्र ▪ भ्रूणविज्ञान ▪ स्तन्यस्रवण के दौरान शरीरवैज्ञानिक परिवर्तन ▪ आनुवंशिकी तथा टेरेटोलॉजी ▪ नैदानिक प्रभाव
10	5	**प्रसवपूर्व देखभाल** ▪ प्रकृति और महत्व ▪ शरीरवैज्ञानिक परिवर्तन ▪ प्रसवपूर्व आकलन : इतिवृत्त तैयार करना, शारीरिक जांच, स्तन्य जांच, स्त्रोणि जांच, प्रयोगशाला जांच, नमूना संग्रह तथा प्रयोगशाला निष्कर्षों की व्याख्या ▪ उच्च जोखिम वाली गर्भावस्थाओं की पहचान ▪ मामूली रोगों की पहचान और देखभाल ▪ प्रसवपूर्व देखभाल परामर्श ▪ मार्गनिर्देशों के अनुसार नैदानिक क्रियाविधियां ▪ कुशल जन्म परिचर मॉड्यूल
11	20	**प्रसव-पीड़ा तथा प्रसव की देखभाल, समस्याओं की पहचान** कुशल जन्म परिचर आईएमएनसीआई मॉड्यूल सामान्य प्रसव-पीड़ा और प्रसव :

		▪ प्रसव-पीड़ा के अनिवार्य तत्व ▪ अवस्थाएं तथा शुरूआत पहली अवस्थाः सामान्य प्रसव-पीड़ा का शरीरविज्ञान • पार्टोग्राफ का प्रयोगः सिद्धांत, प्रयोग और विवेचनात्मक विश्लेषण, साक्ष्य आधारित अध्ययन • प्रसव-पीड़ा में वेदनाहरण तथा संज्ञाहरण • उपचर्या प्रबंध **दूसरी अवस्था** • शरीरविज्ञान, इंट्रापार्टम मॉनीटरन • उपचर्या प्रबंधन • पुनरुज्जीवन, नवजात की तत्काल देखभाल और स्तनपान शुरू कराना (नेशनल नियोनेटोलॉजी फोरम ऑफ इण्डिया के दिशा-निर्देश) **तीसरी अवस्था** • शरीरविज्ञान तथा उपचर्या प्रबंधन **चौथी अवस्था- अवलोकन, विवेचनात्मक विश्लेषण और उपचर्या प्रबंधन** • शिशु जन्म की विभिन्न परिपाटियां : जलजन्म, स्थिति बदलाव आदि • प्रसव संबंधी हस्तक्षेप के बारे में साक्ष्य आधारित परिपाटी **प्रसूति-विद्या, वैकल्पिक/ पूरक चिकित्सा पद्धतियों में नर्स-कर्मी की भूमिका**

नैदानिक उपचर्या- II

विवरण:

यह पाठयक्रम कानूनी और नैतिक मुद्दों, परिवार कल्याण सेवाओं, महिलाओं के स्वास्थ्य को बढ़ावा, विभिन्न स्वास्थ्य देखभाल स्थितियों में गर्भावस्था, प्रसव, प्रसवोत्तर तथा नवजात शिशुओं से जुड़ी समस्याओं के उपचर्या प्रबंध के बारे में समझ विकसित करने के लिए तैयार किया गया है।

उद्देश्य

पाठयक्रम की समाप्ति पर छात्र निम्न बातों में सक्षम होंगे:

1. मार्ग-निर्देशों और प्रोटोकॉलों का प्रयोग करते हुए गर्भावस्था, प्रसव और प्रसवोत्तर अवधि की समस्याओं को पहचानना और उनकी देखभाल करना।
2. मार्ग निर्देशों और प्रोटोकॉलों का प्रयोग करते हुए नवजातों की समस्याओं का पता लगाना और उनकी देखभाल करना।
3. दम्पति और परिवार को अपने परिवारों की योजना बनाने में परिवार कल्याण सेवाएं उपलब्ध कराना।
4. प्रजनन मार्ग संक्रमण, एसटीआई तथा एचआईवी से संबंधित समस्याओं का पता लगाना और उनकी देखभाल करना।
5. स्त्रीरोगवैज्ञानिक समस्याओं का पता लगाना और उनकी देखभाल करना।
6. स्तन कैंसर, गर्भाशय कैंसर और गर्भाशय-ग्रीवा कैंसर जैसी अर्बुदवैज्ञानिक स्थितियों के लिए जांच करना और आगे भेजना।
7. प्रसूति-विद्या व्यवसाय में नीति-संहिता, व्यवहार मानकों, सेवा मानकों और नैदानिक दिशा निर्देश लागू करना।
8. प्रसूति-विद्या व्यवसाय के विभिन्न पक्षों के कानूनी प्रभावों को पहचानना।

कुल घंटे = 155

यूनिट	घंटे	विषय
1	10	**गर्भावस्था के दौरान समस्याओं की पहचान और देखरेख** ▪ गर्भावस्था के दौरान रक्तस्राव सहित परिस्थितियां और उनके परिणाम, प्रसवपूर्व रक्तस्राव; गर्भपात, गर्भावस्था प्रेरित अतिरक्तदाब, एक्लेम्पसिया; असाधारण प्रस्तुतियां, कलाओं का समय-पूर्व विदारण; अन्तरगर्भाशय भ्रूण मृत्यु; अरक्तता, अतिवमनन; मूत्र-मार्ग संक्रमण; अस्थानिक सगर्भता, बहु सगर्भता, अन्तरगर्भाशय विकास मंदता, संकुचित श्रोणि, संबद्ध रोग ▪ इतिवृत्त लेना, शारीरिक जांच तथा प्रयोगशाला परीक्षण, निष्कर्षों की व्याख्या और नैदानिक निर्णय ▪ प्रोटोकॉल के अनुसार स्थितियों की देखरेख ▪ संबंधित औषधियों की फार्माकोलॉजी ▪ देखरेख तथा रैफरल के लिए निर्णय लेना : औषधियों के लिए प्रोटोकॉल, रैफरल के लिए क्रियाविधियां ▪ रिकॉर्ड और रिपोर्टें ▪ मार्गनिर्देशों/ कुशल जन्म परिचर मॉड्यूल के अनुसार नैदानिक क्रियाविधियां
2	10	**प्रसव के दौरान समस्याओं की पहचान और देखरेख** ▪ परिस्थितियां और उनके परिणाम • असाधारण प्रस्तुतियां; प्रसव की दुष्कर दूसरी अवस्था (कष्टप्रसव); विदरित गर्भाशय; प्रसूति शाक; एम्नियोटिक द्रव अन्तःशल्यता, फीटल डिस्ट्रेस; पीपीएच; नाभिनालभ्रंश, नाभिनाल का ग्रीवा में फँसना, गर्भाशय व्युत्क्रमण • जन्मश्वासावरोध; अल्पतप्तता; श्वसन कष्ट, न्यून जन्मभार (एलवीडब्ल्यू) ▪ इतिवृत्त लेना, शारीरिक जांच तथा प्रयोगशाला परीक्षण, निष्कर्षों की व्याख्या और नैदानिक निर्णय ▪ देखरेख तथा रैफरल के लिए निर्णय लेना : औषधियों के लिए प्रोटोकॉल, रैफरल के लिए क्रियाविधियां ▪ विशिष्ट औषधियां देना; आउटलेट फॉरशेप्स, वेन्टयूज, नितम्ब प्रसव के लिए वर्नस मार्शल तकनीक तथा लवसैट युक्ति, अपरा को हाथ से निकालना ▪ गर्भाशय का पुनःस्थापन, गर्भाशय का दुहत्था संपीड़ण, चूषण; स्पर्श उत्तेजन;

		वक्ष संपीड़ण; बैग और मास्क; संवातन; ऑक्सिजन चढ़ाना; इंजेक्शन तकनीक; IV चिकित्सा; गर्भवर्तन; ■ पार्टोग्राफ, गर्भाशय जड़त्व, असमान्वित गर्भाशय संकुचनों का प्रयोग करते हुए प्रसव की प्रगति का मॉनीटरन, ■ सिजेरियन, छेदनः संकेत और तैयारी ■ डिस्ट्रक्टिव ऑपरेशन ■ नवजात का स्वागत तथा पुनरुज्जीवन ■ नैदानिक रिकॉर्ड रखना ■ प्रबंध में सहयोग ■ प्रोटोकॉल के अनुसार परिस्थितियों की देखरेख तथा ■ मार्गनिर्देशों/ कुशल जन्म परिचर मॉड्यूल के अनुसार नैदानिक क्रियाविधियां ■ भगच्छेदन तथा जननांगी अभिघात की मरम्मत; भगच्छेदन के लिए संकेत; जननांगी अभिघात का आकलन, स्थानीय संवेदनाहरण के लिए तकनीक; सीवन तकनीक
3	30	**प्रसवोत्तर अवधि के दौरान महिलाओं और उनके नवजातों के स्वास्थ्य को बढ़ावा तथा समस्याओं की पहचान और देखरेख** <u>प्रसव के बाद पहले 72 घंटे के दौरान महिला का आकलन करें</u> ■ इतिवृत्त लेना, शारीरिक जांच, निष्कर्षों की व्याख्या तथा सामान्य और सामान्य से विचलन की पहचान के लिए नैदानिक निर्णय ■ रिकॉर्ड रखना ■ नैदानिक मार्गनिर्देशों के अनुसार निर्णय लेना ■ प्रसवोत्तरकाल का शरीरक्रियाविज्ञान ■ स्तन्यस्रवण का शरीरक्रियाविज्ञान; स्तनपान कराना ■ नवजात में सामान्य बदलाव ■ शारीरिक जांच, निष्कर्षों की व्याख्या तथा माता और शिशु के लिए सामान्य और सामान्य से विचलन अभिज्ञात करने के लिए नैदानिक निर्णय ■ पोषण तथा लौह और फॉलिक अम्ल सहित महिला की स्वयं अपनी देखभाल के संबंध में महिला और परिवार की शिक्षा <u>ऐसी महिलाएं जो प्रसव के बाद पहले 72 घंटों में समस्याएं महसूस करती हैं और समस्याओं की देखरेखः</u> ■ प्रसूति ज्वर सहित महिलाओं को प्रसवोत्तर प्रभावित करने वाली परिस्थितियां और उनके परीणाम; पूतिता; यूटीआई; पीपीएच; स्तन अधिरक्तता; पिण्डली में

अत्यधिक पीड़ा; शाक; प्रसवोत्तर ब्लूज, रुधिर वर्ग असंगतियां, मूत्राशय-योनि नालव्रण (वीवीएफ), मलाशय-योनि नालव्रण (आरवीएफ)

- इतिवृत्त लेना, शारीरिक जांच तथा प्रयोगशाला परीक्षण, निष्कर्षों की व्याख्या और नैदानिक निर्णय
- प्रबंध रैफरल के संबंध में निर्णय लेने का अभ्यास करने के लिए बहुविध मामला अध्ययनों पर चर्चा
- विशिष्ट दवाइयां देना
- नैदानिक रिकॉर्ड रखना

ऐसे नवजात जो प्रसव के बाद पहले 72 घंटों में समस्याएं महसूस करते हैं और समस्याओं की देखरेख:

- अल्पतप्तता सहित नवजातों को प्रभावित करने वाली परिस्थितियां और उनके परिणाम; कष्ट श्वसन; पीलिया; नवजात संक्रमण; तेज ज्वर, आक्षेप; नवजात टेटनस; न्यून जन्मभार; जन्मजात असमान्यताएं, जन्मक्षतियां, औषधि खूराक की गणना तथा मलाशय मार्ग से विशिष्ट दवाई देना; दूध पिलाने से जुड़ी समस्याएं तथा तरल जरूरतों की गणना
- इतिवृत्त लेना, शारीरिक जांच तथा प्रयोगशाला परीक्षण, निष्कर्षों की व्याख्या और नैदानिक निर्णय
- प्रबंध रैफरल के संबंध में निर्णय लेना
- विशिष्ट दवाएं देना; चम्मच से दूध पिलाना; नलकी से दूध पिलाना
- नवजात की देखभाल के संबंध में महिला और परिवार की शिक्षाः ताप नियमन, स्तनपान कराना, आँखों, नाभिनाल, त्वचा की देखभाल तथा प्रतिरक्षीकरण
- नैदानिक मार्गनिर्देशों, कुशल जन्म परिचर मॉड्यूल, अनिवार्य नवजात देखभाल (इनएनवीसी) मॉड्यूल का प्रयोग
- नैदानिक रिकॉर्ड रखना

प्रसव के बाद 72 घंटे से लेकर छः सप्ताह तक माता और नवजात की देखभाल

- स्वच्छता, नाभिनाल देखभाल, स्तनपान कराना, स्तन के दूध की मुखाकृति तथा भंडारण,माता के लिए आराम और पोषण, सामान्य शिशु की वृद्धि शैलियां, शिशु को दूध पिलाना, प्रतिरक्षीकरण, परिवार नियोजन
- परिवार नियोजन के लिए यथाअपेक्षित सेवाओं और रैफरल के प्रावधान के संबंध में परामर्श देना

प्रसवोत्तर अवधि के दौरान प्रभावित करने वाली समस्याएं तथा परिस्थितियों की देखरेख

- गर्भाशय आंशिक प्रत्यावर्तन
- स्तनशोथ/ स्तन फोड़ा सहित परिस्थितियां और उनके परिणाम; दूध पिलाने से जुड़ी समस्याएं
- इतिवृत्त लेना, शारीरिक जांच तथा प्रयोगशाला परीक्षण, निष्कर्षों की व्याख्या

		और नैदानिक निर्णय ▪ प्रबंध तथा रैफरल के संबंध में निर्णय लेना ▪ स्तन फोड़े का प्रोटोकॉल के अनुसार छेदन तथा निकास ▪ शिरा घनास्रता, प्रसवोत्तर मनोविक्षिप्ति ▪ नैदानिक रिकॉर्ड रखना **नवजातों की देखभाल** अनिवार्य नवजात देखभाल मॉड्यूल, आईएमएनसीआई मार्गनिर्देशों का प्रयोग करें दम्पतियों को मातृपितृत्व परिपाटियों की शिक्षा दें **एकीकृत नवजात बालरोग प्रबंध (आईएमएनसीआई) मॉड्यूल का प्रयोग करें** **मार्गनिर्देशों के अनुसार नैदानिक क्रियाविधियां**
4	15	**महिलाओं को अपने परिवारों की योजना बनाने में मदद करने के लिए परिवार कल्याण सेवाएं** परामर्श देना: परिवार कल्याण ▪ जिम्मेदारी बाँटना तथा निर्णय लेने के परिणाम ▪ परिवार नियोजन विधियों कीं व्यापक श्रृंखला (दूध पिलाने वाली माताओं के लिए उपयुक्त गर्भनिरोधकों सहित); शीघ्र/ बार-बार जनन का प्रभाव; लैंगिक वरीयता और उच्च जनन क्षमता के बीच संबंध ▪ इतिवृत्त लेना, शारीरिक जांच (विशेष रूप से श्रोणि जांच), निष्कर्षों की व्याख्या तथा उपयुक्त गर्भनिरोधकों के लिए पात्रता का पता लगाने के वास्ते नैदानिक निर्णय ▪ रिकॉर्ड रखना ▪ सकारात्मक, समर्थनकारी तथा सहयोगात्मक अभिवृत्तियां विकसित करना चुनी गई परिवार नियोजन विधि के संबंध में व्यक्तियों/ दम्पतियों को परामर्श ▪ यथाउपयुक्त सेवाएं और रैफरल ▪ कंडोम के प्रयोग संबंधी कार्रवाई, प्रभाविता, लाभ, हानियां, मिथ, भ्रांतियां, अफवाहें, चिकित्सीय पात्रता, मुखीय गर्भनिरोधक गोली, स्तन्यस्रवण, अनार्तव, आईयूसीडी, पुरुष (बिना चीरे के नसबंदी) तथा महिला बंध्यकरण; आनुषंगी प्रभावों/ जटिलताओं की देखरेख; कंडोमों और गोलियों का भंडारण ▪ एमटीपी विधियां ▪ रिकॉर्ड रखना अनुवर्ती कार्रवाई ▪ अनुवर्ती कार्रवाई का महत्व और अनुशंसित समय ▪ कार्यनितियों की श्रृंखला (जैसेकि एक औपचारिक स्मारक प्रणाली बनाए रखना)

		▪ नैदानिक रिकॉर्ड रखना ▪ अन्य स्वास्थ्य कार्मिकों के साथ सहयोग ▪ सहयोग को बढ़ावा देना गर्भनिरोधक विधि को लेकर समस्याएं महसूस करने वाली महिलाओं/ दम्पतियों को भेजना और उनकी देखरेख करना ▪ प्रत्येक प्रकार की गर्भ-निरोधक विधि का प्रयोग करने के मामले में महिला/ दम्पति की समस्याओं के लिए नैदानिक मार्गनिर्देश; समस्याओं के परिणाम ▪ निर्णय लेना और उनका औचित्य ▪ नैदानिक मार्गनिर्देशों का प्रयोग करते हुए रैफरल के लिए कार्यनितियां और प्रक्रिया, क्रियाविधियां निर्धारित करना ▪ नैदानिक रिकॉर्ड रखना
5	20	**गैर-जनन अवधि के दौरान महिलाओं के स्वास्थ्य को बढ़ावा** आरटीआई, एसटीआई, एचआईवी से ग्रस्त महिलाओं की देखभाल ▪ प्रजनन मार्ग संक्रमण, एसटीआई तथा एचआईवी; उपचार; साथी का उपचार; लांछन और गोपनीयता, रोकथाम ▪ रजोनिवृति और इससे जुड़ी समस्याएं-अस्थिसुषिरता ▪ इतिवृत्त लेना, शारीरिक जांच (विशेष रूप से श्रोणि जांच, पैप लेप सहित), निष्कर्षों की व्याख्या तथा विशिष्ट समस्याओं की पहचान के लिए नैदानिक निर्णय ▪ नैदानिक मार्ग-निर्देशों के अनुसार निर्णय लेना ▪ रैफरल सहित प्रत्येक विशिष्ट समस्या का उपचार और नुस्खा, नैदानिक मार्ग निर्देशों का प्रयोग करते हुए सदैव गोपनीयता का पालन करते हुए ▪ जननांगी मार्ग संक्रमणों से ग्रस्त महिलाओं को तथा जहां निर्देश दिया गया हो उनके साथियों को परामर्श देना ▪ रैफरल ▪ नैदानिक रिकॉर्ड रखना ए. गर्भाशय भ्रंश, जननांगी मार्ग नियोप्लेजिया तथा स्तन कैंसर से ग्रस्त महिलाओं का रैफरल/ देखभाल ▪ महिलाओं के गर्भाशय भ्रंश, जननांगी मार्ग नियोप्लेजिया तथा स्तन कैंसर के लिए उपलब्ध उपचार विकल्प, अनुवर्ती कार्रवाई का महत्व ▪ इतिवृत्त लेना, शारीरिक जांच, निष्कर्षों की व्याख्या तथा विशिष्ट समस्याओं की पहचान के लिए नैदानिक निर्णय

		▪ नैदानिक मार्ग-निर्देशों के अनुसार निर्णय लेना ▪ नैदानिक मार्ग-निर्देशों का प्रयोग करते हुए उपचार प्राप्त कर रही महिलाओं को उपचार के लिए आगे भेजने की प्रक्रियाएं और क्रियाविधियां ▪ उपचार करा रही महिला के लिए परामर्श और शिक्षा ▪ अनुवर्ती कार्रवाई को सुविधाजनक बनाने के लिए अन्य स्वास्थ्य कार्मिकों के साथ सहयोग ▪ सहयोग को बढ़ावा देने के लिए महिलाओं, सहकर्मियों के साथ अन्तर्वैयक्तिक सम्पर्क ▪ सकारात्मक, समर्थनकारी तथा सहयोगात्मक अभिवृत्तियां विकसित करना बांझपन के लिए सलाह/ उपचार मांगने वाले परिवारों के लिए परामर्श और रैफरल ▪ गर्भ धारण, बांझपन से संबंधित कामुकता तथा लैंगिक परिपाटियां तथा परिवार और समुदाय की प्रतिक्रियाएं ▪ महिला और उसके परिवार के लिए रैफरल प्रक्रियाएं और क्रियाविधियां ▪ बांझपन के लिए महिलाओं को परामर्श देना ▪ समानुभूति तथा करुणा का विकास ▪ दत्तक-ग्रहण
6	**5**	**कानूनी और नैतिक मुद्दे** - नीति संहिता और इसके प्रभाव - प्रसूति-विद्या में नर्स-कर्मियों के लिए व्यवहार मानक, सेवा मानक और इनके प्रभाव - दूसरे देशों की नीति संहिता और प्रसूति विद्या मानक - आईएनसी अधिनियम - व्यवसाय के लिए कानूनी तंत्र और इसके प्रभाव - दत्तक-ग्रहण विधियां, एमटीपी अधिनियम, प्रसव-पूर्व नैदानिक परीक्षण (पीएण्डडीटी) अधिनियम, स्थानापन्न माताएं

पर्यवेक्षण और प्रबंध, नैदानिक शिक्षण, प्रारंभिक अनुसंधान और सांख्यिकी

कुल घंटे 90

सेक्शन-ए पर्यवेक्षण और प्रबंध	30 घंटे
सेक्शन-बी नैदानिक शिक्षण	30 घंटे
सेक्शन-सी प्रारंभिक अनुसंधान और सांख्यिकी	30 घंटे

विवरण

यह पाठ्यक्रम पर्यवेक्षण और प्रबंध, नैदानिक शिक्षण तथा अनुसंधान के लिए सिद्धांतों की समझ विकसित करने के लिए तैयार किया गया है।

उद्देश्य

पाठ्यक्रम की समाप्ति पर छात्र को निम्न बातों में सक्षम हो जाना चाहिए:

1. व्यावसायिक प्रवृत्तियों का वर्णन करना
2. मातृ तथा नवजात देखभाल में उपचर्या कार्मिकों के प्रबंधन और पर्यवेक्षण में नर्स की भूमिका का वर्णन करना
3. नर्सों और संबंद्ध स्वास्थ्य-कर्मियों को मातृ और नवजात उपचर्या में शिक्षा प्रदान करना
4. अनुसंधान प्रक्रिया का वर्णन करना तथा बुनियादी सांख्यिकीय परीक्षण निष्पादित करना
5. मातृ और नवजात उपचर्या में अनुसंधान की योजना बनाना और अनुसंधान करना
6. स्वअधिगम, प्रचालन अनुसंधान तथा शैक्षिक क्रियाकलापों में भाग लेने के माध्यम से व्यावसायिक उन्नति के महत्व को पहचानना

यूनिट	घंटे	विषय
1	20	**पर्यवेक्षण और प्रबंध** ▪ प्रबंध • परिभाषा और सिद्धांत • मातृ और नवजात देखभाल की देखरेख के तत्व :- योजना बनाना, आयोजन, स्टॉफ व्यवस्था, रिपोर्ट देना, रिकॉर्ड करना और बजट निर्माण • प्रसूति यूनिट, प्रसव कक्ष, एनआईसीयू प्रबंधः- समय, सामग्री और कार्मिक • एक आदर्श प्रसूति यूनिट, प्रसवपूर्व, प्रसवोत्तर तथा पांच वर्ष से कम आयु वालों के लिए क्लिनिकों, प्रसव कक्ष, अस्पताल और समुदाय में एनआईसीयू का नक्शा और डिजाइन

		• उच्च जोखिम वाली माताओं के लिए परिवहन सेवाएं • नवजात परिवहन सेवाएं - नवजातों के परिवहन के लिए योजना निर्माण - परिवहन के लिए पुरुषों और सामग्री की योजना बनाना - एक आदर्श परिवहन इंक्यूवेटर ■ नैदानिक पर्यवेक्षण • पर्यवेक्षण का परिचय, परिभाषा और उद्देश्य • पर्यवेक्षण के सिद्धांत और कार्य • पर्यवेक्षकों के गुण • नैदानिक पर्यवेक्षकों की जिम्मेदारियां • प्रसूति-विद्या और नवजात देखभाल के व्यवहार मानक - नीतियां और क्रियाविधियां - स्थायी आदेश और प्रोटोकॉल तैयार करना • नई भर्ती वालों के लिए दिशानुकूलन कार्यक्रम ■ मातृ और नवजात यूनिटों में गुणवत्ता आश्वासन कार्यक्रम • उपचर्या ऑडिट ■ निष्पादन मूल्यांकन • निष्पादन मूल्यांकन के सिद्धांत • निष्पादन मूल्यांकन के साधन - क्रम-निर्धारण माप - पड़ताल सूचियां - हमजोली समीक्षाएं - स्वमूल्यांकन ■ स्टाफ विकास • परिचय और प्रयोजन • सेवाकालीन शिक्षा • सतत शिक्षा
यूनिट II	5	■ व्यावसायिक प्रवृत्तियां • परिचय • भारत में उपचर्या में नीति संहिता, व्यावसायिक आचरण संहिता तथा व्यवहार मानक • मातृ और नवजात देखभाल में नैतिक मुद्दे • नर्स की विस्तारित भूमिका : विशेषज्ञ नर्स, नर्सकर्मी आदि • व्यावसायिक संगठन

यूनिट III	5	▪ चिकित्सीय-विधिक पक्ष ● मातृ और नवजात देखभाल से संबंधित कानून और विनियम ● उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम (सीपीए) ● लापरवाही तथा कदाचार ● नर्सों की कानूनी जिम्मेदारियां - अस्पतालों में सेवाओं में लापरवाही संबंधी निर्णय के मामला अध्ययन ● चिकित्सीय-विधिक पक्ष - एमटीपी अधिनियम, पीएनडीटी अधिनियम, परित्यक्त शिशु, अनाथालयों को अन्तरण, दत्तक-ग्रहण सेवाएं, यूनिट से नवजातों का गुम होना, शवों का संरक्षण, अध्ययन प्रयोजनों के लिए उन्हें विभिन्न संस्थानों में भेजना ● रिकॉर्ड और रिपोर्टें ● कानूनी मुद्दे में नर्स की भूमिका
यूनिट IV	30	▪ अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया ● परिचय और अवधारणाएं ● अध्यापन और अधिगम के सिद्धांत ● अधिगम लक्ष्यों का निर्धारण ● पाठ आयोजना ● अध्यापन विधियां - लेक्चर - निदर्शन, अनुकरण, चर्चा - नैदानिक अध्यापन विधियां - सूक्ष्म अध्यापन - स्वअधिगम ● मूल्यांकन - छात्रों का मूल्यांकन o प्रयोजन o कोटि o उपाय o ज्ञान, कौशल और अभिवृत्ति का मूल्यांकन करने के लिए साधन ● अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया में मीडिया का प्रयोग
यूनिट IV	30	▪ अनुसंधान ● अनुसंधान और अनुसंधान प्रक्रिया ● अनुसंधान की कोटियां ● अनुसंधान समस्या/ प्रश्न

		• साहित्य की समीक्षा • अनुसंधान दृष्टिकोण और डिजाइन • प्रतिचयन • डाटा संग्रह : साधन और तकनीक • डाटा का विश्लेषण और व्याख्या • अनुसंधान का संप्रेषण और उपयोग • मातृ और नवजात देखभाल में अनुसंधान प्राथमिकताएं ■ सांख्यिकीय • डाटा के स्रोत और प्रस्तुति - गुणवत्तात्मक तथा मात्रात्मक - सारणीकरण; आवृत्ति विभाजन और शतमक - ग्राफीय प्रस्तुति • केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप माध्य, माध्यका, बहुलक • प्रसरण के माप • सामान्य प्रायिकता तथा महत्व के परीक्षण • सहसंबंध का गुणांक • सांख्यिकीय पैकेज और उनका अनुप्रयोग • अनुसंधान प्रस्ताव तैयार करना ■ कम्प्यूटरों का अनुप्रयोग

अध्यापन-अधिगम क्रियाकलाप

(i) **अध्यापन की विधियां:**

- √ लेक्चर
- √ निदर्शन और चर्चा
- √ पर्यवेक्षित अभ्यास
- √ संगोष्ठी
- √ भूमिका निर्वाह
- √ कार्यशाला
- √ सम्मेलन
- √ कौशल प्रशिक्षण
- √ अनुकरण
- √ क्षेत्रीय दौरे
- √ अनुसंधान परियोजना

(ii) **श्रव्य दृश्य सहायक सामग्री:**

- √ ओवरहैड प्रोजेक्टर
- √ स्लाइड प्रोजेक्टर
- √ ब्लैकबोर्ड
- √ ग्राफीय सहायक सामग्री
- √ कार्यक्रमानुसार वीडियो कार्यक्रम
- √ मॉडल तथा नमूने
- √ एलसीडी प्रोजेक्टर
- √ कम्प्यूटर

(iii) **मूल्यांकन की विधियां :**

- √ लिखित परीक्षा
- √ वस्तुनिष्ठ कोटि
- √ संक्षिप्त टिप्पणियां
- √ ऐसाइन्मेंट
- √ मामला अध्ययन/ देखभाल टिप्पणियां
- √ नैदानिक प्रस्तुति
- √ संगोष्ठियां
- √ परियोजना

अनिवार्य नैदानिक/ प्रायोगिक क्रियाकलाप

- रोगी देखभाल ऐसाइन्मेंट

- आबंटित नवजातों के लिए उपचर्या देखभाल योजना लिखना
- एक स्तन्यस्रवण नर्स के रूप में काम करना
- मामला अध्ययन लिखना - 5
- मामला प्रस्तुतियां - 5
- प्रेक्षण रिपोर्ट लिखना
- नियोजित स्वास्थ्य अध्यापन - 5
- परियोजना - 1
- नैदानिक अध्यापन
- शय्यागत दौरे करना
- नैदानिक चक्र योजना तैयार करना
- छात्रों के लिए नैदानिक अध्यापन योजना तैयार करना
- छात्रों/ स्टाफ का नैदानिक मूल्यांकन करना
- यूनिट-देखरेख योजना तैयार करना
- पर्यवेक्षण तकनीक- यूनिट रिपोर्ट लिखना, निष्पादन मूल्यांकन, मार्गदर्शन, स्टाफ ऐसाइन्मेंट, सामग्री प्रबंध
- रिकॉर्ड और रिपोर्टें रखना

प्रेक्षित क्रियाविधियां

- नैदानिक जांच : एमनियोटिसेंटेसिस, कोर्डोसेंटेसिस, जरायु अंकुर प्रतिचयन
- बांझपन प्रबंध : कृत्रिम प्रजनन : कृत्रिम गर्भाधानः अन्तःपात्र निषेचन तथा संबंधित क्रियाविधियां
- सहाय्यित प्रजनन प्रौद्योगिकी क्रियाविधियां
- अल्ट्रासोनोग्राफी
- विशिष्ट प्रयोगशाला परीक्षण
- एमनियोसेंटेसिस
- फीटोस्कोपी
- हिस्ट्रोस्कोपी
- एमआरआई
- सर्जीकल डायाथर्मी
- क्रायोसर्जरी

सहाय्यित क्रियाविधियां

- गर्भावस्था का चिकित्सीय समापन
- ऑपरेशन से किया जाना वाला प्रसव
- असाधारण प्रजनन- फोरसेप्स अनुप्रयोग, वेन्टूज, नितम्ब प्रसव
- परस्पर रक्त-आधान
- कल्डोस्कोपी
- सिस्टोस्कोपी

- ट्यूबोस्कोपी
- लैपरास्कोपी
- एंडोमेट्रियल बायोप्सी
- ट्यूबल पेटेन्ट परीक्षण
- कीमोथेरेपी
- विकिरण चिकित्सा
- विस्फारण तथा आखुरण

निष्पादित क्रियाविधियां

- प्रसवपूर्व आकलन-20
- प्रसवोत्तर आकलन-20
- प्रसव के दौरान आकलनः पार्टोग्राफ का प्रयोग-20
- योनि द्वारा जांच-20
- सामान्य प्रसव कराना-20
- भगच्छेदन तथा सीवन-10
- प्रसव-क्षेत्र स्थापित करना
- अन्तःगर्भाशय युक्ति का अन्तर्वेषण (कॉपर टी)
- इतिवृत्त लेना
- शारीरिक जांच-सामान्य
- श्रोणि जांच
- जोखिम स्थिति का आकलन
- अन्तःगर्भाशय भ्रूण की स्थिति का आकलन, किक चार्ट तथा भ्रूण संचलन चार्ट, डॉप्लर आकलन, गैस-तनाव परीक्षण, संकुचन तनाव परीक्षण (ऑक्सिटोसिन चुनौती परीक्षण)
- सार्वभौमिक सावधानियां- जैवचिकित्सीय अपशिष्ट का निपटान
- योनि के माध्यम से जांच और व्याख्या (समय पूर्व गर्भावस्था, प्रसव, प्रसवोत्तर)
- पार्टोग्राफ का प्रयोग
- चिकित्सीय तथा सर्जीकल प्रेरण (कलाओं का कृत्रिम विदारण)
- निर्वात निष्कर्षण
- प्रसव कराना
- तरलों और इलैक्ट्रोलाइट्स का नुस्खा और उन्हें अन्तःशिरा माध्यम से पहुंचाना
- आउटलेट फोरसेप्स का प्रयोग, नितम्ब प्रसव- बर्न्स मार्शल, लवसैट हस्तकौशल
- विदारणों की मरम्मत तथा भगच्छेदन की सिलाई करना
- नियंत्रित नाभिनाल कर्षण, अपरा को हाथ से हटाना, अपरा की जांच
- हाथ से निर्वात चूषण

- स्तन अधिरक्तता की देखरेख
- घनास्त्र-शिराशोथ (व्हाइट लैग)
- प्रसवोत्तर परामर्श
- गर्भाशय के व्युत्क्रमण की पुनःस्थापना
- प्रयोगशाला परीक्षणः रुधिर- एचवी, शर्करा, मूत्र-एल्ब्यूमिन, शर्करा
- स्तन देखभाल, स्तन की जांच और स्तन फोड़े की निकासी
- प्रसवोत्तर व्यायाम
- ऑपरेशन थियेटर जमाना
- प्रसूतिवैज्ञानिक तथा स्त्रीरोगवैज्ञानिक ऑपरेशनों के लिए ट्राली और मेज का विन्यास
- गर्भाशय-ग्रीवा तथा योनिक कोशिका प्रकरण- पैपस्मीयर, योनिकस्मीयर
- पेसरी का अन्तर्वेषण
- आयूडी का अन्तर्वेषण और उसे निकालना
- नवजात आकलन; शारीरिक स्नायुतंत्रीय, अपगार गणन, उच्च जोखिम वाले नवजात, नवजातों का मॉनीटरन; नैदानिक तथा मॉनीटरों की सहायता से, कैपिलरी पुनःपूर्ति समय पीलिया, खतरे के संकेतों का आकलन
- मानवमितीय माप
- नवजात पुनरुज्जीवन
- जठर धावन
- बहुचैनल मॉनीटर और वैंटीलेटर में नवजात की देखभाल
- रैडियेंट वार्मर तथा इंक्यूवेटर में नवजात की देखभाल
- कंगारू मातृ देखभाल
- भां की नितान्तः स्तनपान कराने में सहायता
- दूध पिलाने के तकनीकः कटोरी, चम्मच, नासो/ ओरोगैस्ट्रिक
  पूर्णतः आन्त्रेतर पोषण
- तरलों और औषधियों का आकलन, गणना और उन्हें प्रदान करना
  - मुखीय
  - आईडी
  - आईएम
  - आईवी- आईवी लाइन, इन्फ्यूजन पंप प्राप्त करना
- मलाशय के माध्यम से औषधि देना
- कैपिलरी रुधिर नमूना संग्रह
- ऑक्सीजन चिकित्सा
- फोटो चिकित्सा
- वक्ष भौतिक-चिकित्सा
- परामर्श- माता पिता को, मृत्यु, परिवार नियोजन, बन्ध्यता आदि

- अध्यापन कौशल
- संचार कौशल
- रैफरल पर्चियां तैयार करना
- परिवहनपूर्व स्थिरीकरण
- अन्य पणधारियों के साथ नेटवर्क निर्माण

अन्य

- उच्च जोखिम वाली महिलाओं की पहचान और रैफरल
- स्वास्थ्य शिक्षाः महिलाओं और उनके परिवारों को
- नियोजित मातृ-पितृत्व के लिए प्रेरण

टी. दिलीप कुमार, अध्यक्ष

[विज्ञापन-III/IV/102/07/असा.]

INDIAN NURSING COUNCIL

NOTIFICATION

New Delhi, the 10th December, 2007

F. No. 11-1/2007-INC.—In exercise of the powers conferred by Section 16 of the Indian Nursing Council Act, 1947 (48 of 1947), the Indian Nursing Council hereby makes the following Regulations namely :—

1. **Short Title and Commencement** :—These Regulations may be called the "Post Basic Diploma-Nurse Practitioner in Midwifery".

2. These regulations will become effective from on OR after May 2003.

NURSE PRACTITIONER IN MIDWIFERY

(POST BASIC DIPLOMA)

INTRODUCTION

The National Population Policy 2000 includes reduction of maternal and infant mortality as one of the socio-demographic goals to be achieved by 2010[3].

The survival of mothers and babies is closely correlated with the care and attention received during pregnancy and, most importantly, at the time of delivery. Delayed management of cases, due to lack of access to skilled care, is one of the major reasons for the deaths, particularly in the rural areas.

The single most important way to reduce maternal death in India would be to ensure that a skilled health professional is present at every birth. Skilled care during childbirth is important because millions of women and newborns develop serious and hard to predict complications during or immediately after delivery. Skilled health professionals such as doctors or nurses who have midwifery skills can recognise these complications, and either treat them or refer women to health centres or hospitals immediately if more skilled care is needed.

Nurse practitioner in midwifery will be responsible for promotion of health of women throughout their life cycle, with special focus on women during their childbearing years and their newborns. She will be responsible for providing care to women prior to pregnancy, during pregnancy, childbirth, after childbirth and care of newborn and assume responsibility and accountability for their practice. The nurse practitioner will practise within the existing peripheral health system consisting of skilled birth attendants, auxiliary nurse midwives, nurses, doctors and specialists and will be posted at a facility where no obstetricians are posted or available.

Nurse practitioner in Midwifery is designed to develop more nurses to work as nurse practitioners for providing competent care at the institutional and community levels.

PHILOSOPHY

Indian Nursing Council believes that registered nurses need to work as nurse practitioner in midwifery in clinical and community settings in order to provide competent care to mother and neonate. Expanding roles of nurses and advances in technology necessitates additional training to prepare them for effective participation in midwifery care.

PURPOSES

The purposes of the course are to train nurses to:

1. Provide quality care to mother and neonate.
2. Manage & supervise care of mother and neonate at all the three levels of care.
3. Teach nurses, allied health professionals, parents and communities in areas related to mother and neonate care.
4. Conduct research in areas of mother and neonate care.

COURSE DESCRIPTION

The course is designed to prepare registered nurses (GNM or B.Sc) as nurse practitioner in midwifery with specialized knowledge, skills and attitude in providing advance quality care to mother and neonate, their families and communities at all the three levels of care.

GUIDELINES FOR STARTING THE NURSE PRACTITIONER IN MIDWIFERY

THE PROGRAMME MAY BE OFFERED AT

A) The Government (State/Center/Autonomous) nursing teaching institution offering diploma or degree programmes in nursing having parent/ affiliated Government Hospital facilities of maternity, neonatal and paediatric units

Or

B) Other non-Govt. nursing teaching institution offering diploma or degree programmes in nursing having parent Hospital facilities of maternity, neonatal and paediatric units.

Or

C) 50 bedded parent hospital having:
- Mother and neonatal units
- Case load of minimum 500 deliveries per year
- 8-10 level II neonatal beds.
- Affiliation with level III neonatal beds

RECOGNITION PROCEDURE

1. Any institution which wishes to start nurse practitioner in midwifery should obtain the No Objection/Essentiality certificate from the State government. However, the institutions which are already recognized by INC for offering diploma/degree programmes in nursing are exempted for obtaining the No Objection/Essentiality certificate.

2. The Indian Nursing council on receipt of the proposal from the Institution to start this nursing program, will undertake the inspection to assess suitability with regard to physical infrastructure, clinical facility and teaching faculty in order to give permission to start the programme.

3. After the receipt of the permission to start the nursing programme from Indian Nursing Council, the institution shall obtain the approval from the State Nursing Council and Examination Board/University.

4. Institution will admit the students only after taking approval of State Nursing Council and Examination Board/University.

5. The Indian Nursing Council will conduct inspection for two consecutive years for continuation of the permission to conduct the programme.

STAFFING

1. Full time teaching faculty in the ratio of 1:5

Qualification:

- M.Sc Nursing with Obstertics and Gynae/Community/ Paediatrics Specialty
- Nurse practitioner in midwifery with B.Sc nursing

Experience: Minimum 3 years

2. ***Guest faculty*** - multi-disciplinary in related specialties

BUDGET

There should be budgetary provision for staff salary, honorarium for part time teachers, clerical assistance, library and contingency expenditure for the programme in the overall budget of the institution.

PHYSICAL FACILITIES

1. *Class room* – 1

2. *Nursing Laboratory* –1

3. *Library* – Current nursing textbooks & journals(national and international publications) including midwifery, maternal, neonatal, community health and pediatric nursing, reference manuals.

4. *Teaching Aids* - Facilities for the use of
   - Overhead projector
   - Slide Projector
   - TV with VCP or VCR
   - LCD projector
   - Computer
   - Equipment for demonstration of skills(manikins, resusci baby, zoe model, ambubag and mask, care equipments etc)

5. *Office facilities-*
   - Services of typist, peon, safai karamchari
   - Facilities for office, equipment and supplies, such as
     - Stationary
     - Computer with printer
     - Xerox machine/Risograph
     - Telephone and fax

CLINICAL FACILITIES

Minimum Bed strength: - 50 bedded parent hospital having:
- Mother and neonatal units
- Case load of minimum 500 deliveries per year
- 8-10 level II neonatal units.
- Affiliation with level III neonatal units
- Affiliated to Rural Hospital / CHC

ADMISSION TERMS AND CONDITIONS

The student seeking admission to this course should:
1. Be a registered nurse and registered midwife (R.N. & R.M).
2. Possess a minimum of one year experience as a staff nurse.
3. Nurses from other countries must obtain an equivalence certificate from INC before admission.
4. Be physically fit.
5. No. of seats – 10 students for minimum 500 deliveries per year - 20 students for minimum 1000 deliveries per year

ORGANIZATION OF THE COURSE

A. Duration: Duration of the course is one academic year.

B. Distribution of the Course:

1. Teaching: Theory & Clinical practice	42 weeks
2. Internship	4 weeks
3. Examination (including preparation)	2 weeks
4. Vacation	2 weeks
5. Public holidays	2 weeks
	52 weeks

C. Course objectives:

General Objective

At the end of the course the student will be able to develop an understanding of philosophy, principles, methods and issues, management, education and research in midwifery and neonatal care. Further more, this course will prepare nurse practitioners for providing maternal and newborn care within the existing peripheral health system in collaboration with other relevant health care providers.

Objectives

At the end of the course student should be able to :

1. Describe the concepts and principles of maternal and neonatal nursing
2. Provide care using a range of advanced skills as per clinical guidelines for the nurse practitioner in midwifery
3. Use/demonstrate analytical decision-making skills in providing advanced midwifery and newborn care
4. Practice midwifery in accordance with the Practice Standards for the nurse practitioner in midwifery and newborn care
5. Demonstrate commitment to the Code of Ethics for the nurse practitioner in midwifery
6. Communicate effectively and foster family relationships actively

7. Organize and demonstrate skills in management of maternal and newborn care
8. Assume professional responsibility and accountability for professional decisions and actions
9. Practice midwifery and neonatal care in collaboration with other relevant health care providers
10. Provide evidence of nurturing the personal and professional self
11. Conduct research in maternal and newborn care
12. Teach and supervise nurses and allied health workers

D. Course of Studies:

	Theory	Practical
1. Clinical Nursing-I (Inclusive of foundation courses)	90 Hours	Integrated Clinical Practice 1410 Hours
2. Clinical Nursing-II	90 Hours	
3. Supervision & Management, Clinical Teaching, Elementary Research & Statistics		
(i) Supervision & Management	30 Hours	
(ii) Clinical Teaching	30 Hours	
(iii) Elementary Research & Statistics	30 Hours	
4. Internship		160 Hours
TOTAL	**270 Hours**	**1570 Hours**

- Hours distribution for theory and practice 42 weeks X 40 hours/week = 1680 hours
- Block classes 04 weeks X 40 hours/week = 160 hours
- Integrated theory & clinical practice 38 weeks X 40 hours/week = 1520 hours
  - (Theory 270 hrs)* Theory 4 hours /week 28 weeks X 04 hours/week = 112 hours
  - Clinical experience 34 hours/weeks 28 weeks X 36 hours/week = 1008 hours
    10 weeks X 40 hours/week = 400 hours
- Internship: 4 weeks x 40 hours = 160 hours

E. Clinical Experience

Areas of clinical experience required

***Maternal and neonatal care Services – 38 weeks**

Sl. No.	Units / Departments	No. of weeks
01.	Antenatal OPD including Infertility clinics/ Reproductive medicine, Family welfare and post partum clinic / PTCT centre	6 weeks
02.	Antenatal and Postnatal ward	4 weeks
03.	Labour room	8 weeks
04.	Neonatal Intensive Care Unit	4 weeks
05.	Obstetric/Gynae operation Theatre	4 weeks
06.	Gynae ward	2 weeks
07.	Paediatric OPD /under five clinic	2 weeks
08.	Paediatric ward	2 weeks
09.	CHC,PHC,SC	6 weeks
	Total practical hours	**38 weeks (1410 hrs)**
	Internship	**4 weeks in community**

EXAMINATION SCHEME

	Int. Ass. Marks	Ext. Ass. Marks	Total marks	Duration (in hours)
A. Theory				
Paper I- Clinical Nursing I	50	150	200	3
Paper II- Clinical Nursing II	50	150	200	3
Paper III- Supervision & Management, Clinical Teaching, Elementary Research & Statistics	50	150	200	3
B. Practical				
Clinical Nursing (teaching & supervision to be integrated)	100	100	200	
Grand Total	**250**	**550**	**800**	

C. Conditions for Admission to Examination

The Student:

1. Has attended not less than 75% of the theoretical instruction hours in each subject during the year.

2. Has done not less than 75% of the clinical practical hours. However, students should make up 100% of attendance for integrated practice experience and internship in term of hours and activities before awarding the certificate.

EXAMINATION

The examination to be conducted by the State Nursing Registration Council/State Nursing Examination Board/University recognized by the Indian Nursing Council.

Standard of Passing

1 In order to pass a candidate should obtain at least 50% marks separately in internal Assessment and external examination in each of the theory practical and papers.

2 a) Less than 60% is Second division,
b) 60 % and above and below 75% is First division,
c) 75 % and above is Distinction.

3. Students will be given opportunity of maximum of 3 attempts for passing

CERTIFICATION

A. TITLE – Nurse Practitioner in midwifery(Post basic diploma).
B. A diploma is awarded upon successful completion of the prescribed study programme, which will state that

i) Candidate has completed the prescribed course of Nurse Practitioner in midwifery (Post basic diploma).
ii) Candidate has completed prescribed clinical experience.
iii) Candidate has passed the prescribed examination.

CURRICULUM

CLINICAL NURSING - I

(Including Foundation Courses)

Description:

This course is designed to enable students to develop an understanding of the principles of related biological and behavioral sciences, with the knowledge and skills to provide services for adolescents, mothers and neonates in the urban, rural and tribal areas thus reducing the risk of maternal and infant mortality and morbidity.

Objectives:

At the end of the course the student will be able to:

1. Explain the Epidemiology of maternal and neonatal health.
2. Describe the components of National Rural Health Mission
3. Explain the organizational structure of health system at various levels
4. List the jobs of the Nurse Practitioners in Midwifery
5. Collaborate effectively with other relevant health care providers in the system, informal health care providers and practitioners of other systems of medicine
6. Refer women/newborns who need advanced care and provide feedback on cases referred to the nurse practitioner in midwifery
7. Develop an effective partnership with the woman and her family
8. Recognize the impact of gender disparities on women in accessing care and facilitate women empowerment.
9. Educate the woman, family and community about various reproductive health Issues
10. Apply the general principles of pharmacology in prescribing medications as per protocol.

11. Recognize the importance of maintaining accurate and complete records and regular reporting and take action by reviewing the reports

12. Practise effective infection control measures

13. Counsel adolescents, couple and family about reproductive health

14. Facilitate community education

15. Explain the significance of antenatal care for the woman and family

16. Perform, record and Interpret the significance of the findings from history, physical examination and laboratory examinations to assess normal and deviation from normal (inform clinical decision making

17. Monitor the progress of labour using the partograph to assess maternal and foetal well- being

18. Manage care for women during pregnancy, labour and puerperium and neonates

Theory = 90 hours

Unit	Hours	Content
1	10	**INTRODUCTION:** ❑ Historical and contemporary perspectives ❑ Epidemiological aspects of maternal and neonatal health ❑ Magnitude of maternal and neonatal health problems ❑ Issues of maternal and neonatal health : Age, Gender, Sexuality, psycho Socio cultural factors, gender disparities, ❑ Women empowerment ❑ Preventive obstetrics ❑ National health and family welfare programmes related to maternal and child health ❑ National Rural Health Mission ❑ Theories, models and approaches applied to midwifery practice ❑ Health care delivery system: National , State, District, and Village level with reference to MCH ❑ Role and scope of Nurse practitioner in midwifery: Job description ❑ Role of NGO's ❑ collaboration with health care providers including Alternate systems of medicine
2	2	**Chain of Referral system** ❑ limitations and possibilities of other health care providers; ❑ policy and protocols for referral; range of strategies ❑ conditions requiring referral, when to refer, where to refer for what condition, how to refer women and newborns, transport arrangements: community resources, advice to families and referral note ❑ Follow up : feedback on cases referred to practitioner Records and reports
3	5	**Communication** ❑ Effective communication : Types and techniques ❑ Interpersonal relationship: Individual,community ❑ Interpersonal communication, steps in interpersonal communication, qualities of a good interpersonal communication session ❑ Grouping/stratifying audience ❑ Behavioural Change Communication(IEC) ❑ Health education ❑ Mass communication

4	20	**Pharmacology** ❑ Drugs used in midwifery practice and neonate care : Action, dosage, effects, side effects and recording, advice to woman (including special precautions while taking medicines); ❑ implications of wrong practices related to prescribing(using case studies) ❑ drug storage, drugs logistics management (procurement and supply, avoiding stock outs) o prescription of medicines as per protocols(standing orders) o performing procedures as per clinical guidelines ❑ Documentation: accurate and complete records
5	3	**Records and reports** ❑ Records to be maintained ❑ Vital statistics ❑ Importance of keeping records complete and accurate including legal implications, ❑ Record storage systems, ❑ Retrieval of records, ❑ Reporting formats and the importance of submitting regular reports as prescribed, reviewing the reports including comparing with previous years, quarters, etc., utilisation of records and reports for taking action to improve services ❑ E-records ❑ Examination of CHC records and report forms
6	5	**Infection control** ❑ National guidelines and institutional policy ❑ Standard safety measures & biomedical waste management ❑ specific techniques for infection prevention; disinfection / sterilisation of equipment; ❑ appropriate cleaning of surfaces; disposal of used and contaminated material, ❑ blood and tissues; ❑ handling sharps; ❑ monitoring implementation of infection prevention strategies; management of needle-stick injuries ❑ Protective Personal equipment
7	10	**Adolscents health** ❑ Growth & development ❑ social and cultural practices ❑ Human sexuality ❑ adolescent problems; physiological and hormonal change ❑ Sex education: Menstrual hygiene, Safe sexual practices, Contraception, ❑ Management of selected reproductive health problems: Anaemia, nutritional deficiencies and menstrual problems

8	5	**Counselling** Principles, types, techniques qualities of a good counsellor; special issues related to counselling
9	5	**Review of Anatomy and physiology** ❑ Review of anatomy and physiology of human reproductive system: male and female ❑ Hormonal cycles ❑ Embryology ❑ Physiological changes during lactation; ❑ Genetics and teratology ❑ Clinical implications
10	5	**Antenatal care** ❑ Nature and importance ❑ Physiological changes ❑ Antenatal assessment: History taking, physical examination, breast examination, pelvic examination, laboratory investigation, sample collection and interpretation of laboratory findings ❑ Identification of high risk pregnancies ❑ Identification and management of minor ailments ❑ Antenatal care advices ❑ Clinical procedures as per the guideline ❑ Skilled Birth Attendant module
11	20	**Management of Labour and Delivery, and Recognition of Problems** Skilled Birth Attendant, IMNCI module Normal labour and delivery: ❑ Essential factors of labour ❑ Stages and onset First stage: Physiology of normal labour • Use of partograph: Principles, use and critical analysis, evidence based studies • Analgesia and anaesthesia in labour • Nursing management **Second stage** • Physiology , intrapartum monitoring • Nursing management. • Resuscitation , immediate newborn care and initiate breast feeding (Guidelines of National neonatalogy forum of India) **Third stage** • Physiology and nursing management **Fourth stage – Observation, critical analysis and Nursing management.** • Various child birth practice: water birth, position change etc • Evidence based practice in relation to labour intervention **Role of nurse practitioner in midwifery** **Alternative/complementary therapies**

CLINICAL NURSING – II

Description:

This course is designed to develop an understanding of legal and ethical issues, family welfare services, promotion of health of women, nursing management of problems of pregnancy, labour, puerperium and new borns in various health care settings.

Objectives:

At the end of the course the student will be able to:

1. Recognise and Manage problems during, pregnancy, labour and postpartum period by using guidelines and protocols
2. Identify and manage problems of newborns using guidelines and protocols.
3. Provide family welfare services to couple and family in planning their families
4. Identify and manage problems related to reproductive tract infection, STI and HIV
5. Identify and manage gyneacological problems.
6. Screen and refer for oncological conditions like breast cancer, uterine cancer and cancer cervix.
7. Apply the Code of Ethics, Practice Standards, Service Standards and Clinical Guidelines in midwifery practice.
8. Recognize the legal implications of various aspects of midwifery practice

Total Hours: 155

Unit	Hours	Subject
1	10	**RECOGNITION AND MANAGEMENT OF PROBLEMS DURING PREGNANCY** ▫ Conditions and their consequences including bleeding during pregnancy, antepartum haemorrhage; abortions, pregnancy induced hypertension and eclampsia; abnormal presentations,premature rupture of membranes; intrauterine foetal death; anaemia; hyperemesis; urinary tract infection;ectopic pregnancy, multiple pregnancy; intrauterine growth retardation, contracted pelvis, associated illnesses ▫ History taking, physical examination, and laboratory tests, interpretation of findings and clinical judgement ▫ Management of conditions as per the protocol ▫ Pharmacology of relevant drugs ▫ Decision making for Management and referral: protocol for drugs, the procedures for referral ▫ Records and reports ▫ Clinical procedures as per the guidelines/Skilled Birth Attendant module

2	10	**Recognition and Management of Problems During Labour** ▫ Conditions and their consequences : • Abnormal presentations; difficult second stage of labour(dystocia); ruptured uterus; Obstetrical shock ; amniotic fluid embolism; foetal distress; PPH; cord prolapse, cord around neck, uterine inversion, • Birth asphyxia; hypothermia; respiratory distress, Low Birth weight(LBW) ▫ History taking, physical examination, and laboratory tests, interpretation of findings & clinical judgement ▫ Decision making for management and referral: protocol for drugs, the procedures for referral ▫ Administration of specific drugs; outlet forceps, ventouse, Burns-Marshall technique and Lovset manouvre for breech delivery, manual removal of the placenta, reposition of the uterus, bimanual compression of uterus, suctioning; tactile stimulation; chest compression; bag and mask, ventilation; administration of oxygen; injection technique; IV therapy, Versions ▫ Monitoring of progress of labour by using partograph, uterine inertia, uncoordinated uterine contractions ▫ Cesearan section: indications and preparation ▫ Destructive operations ▫ Reception of the baby and resuscitation ▫ Maintenance of clinical records ▫ Collaboration in management ▫ Management of conditions as per protocol and ▫ Clinical procedures as per the guideline/ Skilled Birth Attendant module ▫ Episiotomy and repair of genital trauma ; indications for episiotomy; assessment of genital trauma, technique for local anaesthesia; suturing technique
3	30	**Promotion of Health of Women and their Newborns during Postnatal Period and Recognition and Management of Problems** assess the woman during the first 72 hours after delivery ▫ History taking, physical examination, interpretation of findings and clinical judgement to identify normal and deviations from normal. ▫ Maintaining records ▫ decision making as per clinical guidelines ▫ Physiology of puerperium

- Physiology of lactation; breastfeeding;
- normal changes in the newborn;
- Physical examination, interpretation of findings and clinical judgement to identify normal and deviations from normal for mother and baby
- Education of the woman and family about care of herself, including nutrition and iron and folic acid,

<u>women who experience problems during the first 72 hours after delivery and manage problems</u>

- Conditions affecting post partum women and their consequences including puerperal fever; sepsis; UTI; PPH; breast engorgement; severe pain in the calf; shock; postpartum blues, blood group incompatibilities, Vesico vaginal fistula(VVF), recto vaginal fistula(RVF)
- history taking, physical examination, and laboratory tests interpretation of findings and clinical judgement
- Decision making about management referral Discussion a variety of cases studies to practise decision making
- administration of specific drugs
- Maintaining clinical records

<u>newborns who experience problems during the first 72 hours after delivery and their management</u>

- Conditions affecting newborns and their consequences including hypothermia; respiratory distress; jaundice; neonatal infections; high fever; convulsions; neonatorum tetanus; low birth weight; congenital anamolies, birth injuries, calculation of drug dose and administration of specified drugs, including per rectum; feeding problems and calculation of fluid requirements
- History taking, physical examination, and laboratory tests interpretation of findings and clinical judgement
- decision making about management and referral
- Administration of specific drugs; spoon feeding; tube feeding
- Education of the woman and family about care of newborn; thermoregulation, breast feeding, care of eyes, cord, skin and immunization
- Use Clinical guidelines, Skilled Birth Attendant module, Essential New born care (ENBC) module
- Maintaining clinical records

		care for the mother and newborn from 72 hours to 6 weeks after the delivery ▫ Hygiene, cord care, breastfeeding, expression and storage of breast milk, rest and nutrition for the mother , growth patterns of normal infant, infant feeding, immunisation, family planning ▫ Counselling regarding provision of services and referral as required for family planning **problems and management of conditions affecting during postpartum** ▫ Uterine subinvolution ▫ Conditions and their consequences including mastitis / breast abscess; feeding problems; ▫ History taking, physical examination, and laboratory tests, interpretation of findings and clinical judgement ▫ Decision making about management and referral ▫ Incision and Drainage of breast abscess as per the protocol ▫ Venous thrombosis, postpartum psychosis ▫ Maintaining clinical records **Care of newborns** Use Essential Neonatal Born Care, IMNCI guidelines Teach parenting practices to couples **Use Integrated Management of Neonatal Childhood Illnesses (IMNCI) module** **Clinical procedures as per the guidelines**

	4	15	**Family Welfare Services to Help Women Plan their Families.** Counselling :family welfare ❑ Sharing responsibility and Consequences for decision making ❑ Comprehensive range of family planning methods (including contraceptives suitable for the lactating mother); impact of early / Frequent childbearing; relationship between gender preference and high fertility ❑ History taking, physical examination (particularly pelvic examination), interpretation of findings and clinical judgement to identify eligibility for suitable contraceptives. ❑ Maintenance of records ❑ Development of positive, supportive and collaborative attitudes Counsel individuals / couples about the chosen family planning method ❑ Services and referral as appropriate ❑ Action, effectiveness, advantages, disadvantages, myths, misconception, rumours, medical eligibility for use of condoms, Oral Contraceptive Pill, lactational amenorrhoea, IUCD, male(non-scalpel vasectomy) and female sterilisation; management of side effects / complications; storage of condoms and pills, ❑ MTP methods ❑ Maintenance of records Follow up ❑ Importance of follow up and recommended timing ❑ Range of strategies (eg maintaining a formal reminder system) ❑ Maintain clinical records ❑ Collaboration with other health workers ❑ Promote collaboration Refer and manage women/couple who experience problems with contraceptive method ❑ Clinical guidelines for problems in the woman/couple using each type of contraceptive method; consequences of problems ❑ Decision making and justification ❑ Determine strategies and process, procedures for referral Using clinical guidelines ❑ Maintain clinical records

5	20	**Promotion of Health of Women during the Non-Childbearing Period** <u>Care for women experiencing RTI,STI, HIV</u> ❑ Reproductive tract infections,STI and HIV; treatment; treatment of partner; stigma and confidentiality, prevention, ❑ Menopause and its related problems-osteoporosis ❑ History taking, physical examination (including pelvic examination, pap smear, interpretation of findings and clinical judgement to identify specific problems ❑ Decision making as per clinical guidelines ❑ Treatment and prescription for each specific problem including referral, observing confidentiality at all times using clinical guidelines ❑ counselling women suffering from genital tract infections and their partners where indicated ❑ Referral ❑ Maintaining clinical records A. <u>Referral / care for women experiencing uterine prolapse, genital tract neoplasia and breast cancer</u> ❑ Treatment options available for uterine prolapse, genital tract neoplasia , breast cancer to women, the importance of follow up. ❑ History taking, physical examination, interpretation of findings and clinical judgement to identify specific problems ❑ decision making as per clinical guidelines ❑ Referral processes and procedures for the woman in the treatment using clinical guidelines ❑ counselling and education for the woman being treated ❑ collaboration with other health workers to facilitate follow up

		▫ Interpersonal communication with women, colleagues to promote collaboration ▫ development of positive, supportive and collaborative attitudes <u>counselling and referral for families seeking advice/ treatment for infertility</u> ▫ sexuality and sexual practices in relation to conception, infertility and the reactions of the family and community ▫ Referral processes and procedures for the woman and her family ▫ counselling women for infertility ▫ development of empathy and kindness. ▫ Adoption
6	**5**	**Legal and ethical issues** - code of Ethics and its implications - practice Standards for Nurse Practitioners in Midwifery, service standards and its implications - code of Ethics and Midwifery Practice standards from other countries - INC Act - legal frame work for practice and its implications - Adoption laws, MTP act, Pre Natal Diagnostic Test(PNDT) Act, Surrogate mothers,

Supervision & Management, Clinical Teaching, Elementary Research & Statistics

Total Hours: 90

Section-A	**Supervision & Management**	-30 HRS
Section-B	**Clinical Teaching**	-30 HRS
Section-C	**Elementary research & Statistics**	-30 HRS

Description:

This course is designed to develop an understanding of the principles of supervision and management, clinical teaching and research.

Objectives:

At the end of the course the student will be able to:

1. Describe Professional trends.
2. Describe role of nurse in management and supervision of nursing personnel in maternal and neonatal care.
3. Teach nurses and allied health workers about maternal and neonatal nursing.
4. Describe research process and perform basic statistical tests.
5. Plan and conduct research in maternal and neonatal nursing
6. Recognize the importance of professional advancement through self-learning, operations research and participating in educational activities

Unit	Hours	Subject
UNIT I	20	SUPERVISION & MANAGEMENT ▫ Management • Definition & Principles • Elements of management of maternal and neonatal care:-Planning, Organizing, Staffing, Reporting, Recording and Budgeting • Maternity unit, labour room, NICU management:-Time, material & personnel • Layout and Design of an Ideal Maternity unit, Antenatal, postnatal and under 5 clinics, labour room, NICU in hospital and community
		• Transportation services for high risk mothers • Neonatal transport services - Planning of transport of neonates - Planning Men & Material for transportation - An Ideal transport incubator ▫ Clinical supervision • Introduction, definition and objectives of supervision • Principles & Functions of supervision • Qualities of supervisors • Responsibilities of clinical supervisors • Practice Standards of midwifery and neonatal care - Policies and Procedures - Establishing Standing orders and Protocols • Orientation programme for new recruits ▫ Quality Assurance Programme in maternal and neonatal units • Nursing audit ▫ Performance Appraisal • Principles of performance evaluation • Tools of performance appraisal - Rating scales - Checklists - Peer reviews - Self appraisals ▫ Staff development • Introduction & purposes • In-service education • Continuing education

UNIT II	5	▫ Professional trends • Introduction • Code of Ethics, code of professional conduct and practice standards in nursing in India • Ethical issues in maternal and neonatal care • Expanding role of the nurse: Specialist nurse, Nurse Practitioner etc • Professional organizations
UNIT III	5	▫ Medico-Legal aspects • Legislations and regulations related to maternal and neonatal care • Consumer Protection Act (CPA) • Negligence & Malpractice • Legal responsibilities of nurses - Case studies of judgment with regard to negligence of services in the Hospital • Medico legal aspects – MTP act, PNDT act, abandoned babies, transfer to orphanage, adoption services, loss of neonates from the unit, preservation of cadavers, transfer to various institutions for study purpose • Records and Reports • Role of the nurse in Legal issues
UNIT IV	30	▫ Teaching learning process • Introduction and concepts • Principles of teaching and learning • Formulation of learning objectives • Lesson Planning • Teaching methods - Lecture - Demonstration, Simulation - Discussion - Clinical teaching methods - Micro teaching - Self learning • Evaluation

		- Assessment of Students o Purposes o Type o Steps o Tools for assessing knowledge, skill and attitude • Use of media in teaching learning process
UNIT V	30	❑ Research • Research and research process • Types of Research • Research Problem/ Question • Review of Literature • Research ,approaches and designs • Sampling • Data collection: Tools and techniques • Analysis and interpretation of data: • Communication and utilization of Research • Research priorities in maternal and neonatal care ❑ Statistics • Sources and presentation of Data - qualitative and quantitative - Tabulation; frequency distribution, percentiles - Graphical presentation • Measures of central tendency– mean; median, mode • Measures of variance • Normal Probability and tests of significance • Co-efficient of correlation. • Statistical packages and its application • Preparing a research proposal ❑ Application of computers

Teaching Learning Activities

(i) Methods of Teaching:

- √ Lecture
- √ Demonstration & Discussion
- √ Supervised practice
- √ Seminar
- √ Role play
- √ Workshop
- √ Conference
- √ Skill training
- √ Simulations
- √ Field visits
- √ Research project

(ii) A.V Aids:

- √ Over head projector
- √ Slide Projector
- √ Black board
- √ Graphic Aids
- √ Programmed – Video shows
- √ Models & Specimens
- √ LCD projector
- √ Computer

METHODS OF ASSESSMENT:

- √ Written examination
- √ Objective type
- √ Short notes
- √ Assignments
- √ Case studies/care notes
- √ Clinical presentation
- √ Seminars
- √ Project

ESSENTIAL CLINICAL/PRACTICAL ACTIVITIES

- Patient Care Assignments
- Writing of Nursing care plan for assigned neonates
- Work as Lactation nurse
- Writing case studies - **5**
- Case presentations - **5**
- Writing Observation report
- Planned health teaching - **5**
- Project - **1**
- Clinical teaching - **3**
- Conduct bedside rounds
- Prepare clinical rotation plan
- Prepare clinical teaching plan for students
- Perform clinical evaluation of students/staff
- Unit management plan- Designing
- Supervision techniques- Writing unit report, Performance appraisal, Guidance, Staff assignment, Material management
- Maintenance of Records and Reports

PROCEDURES OBSERVED

- Diagnostic investigations : amniotcentecis, chordocentecis, chorionic villi sampling
- Infertility management: artificial reproduction : artificial insemination, invitro fertilization, and related procedures
- Assisted Reproductive Technology procedures
- Ultra sonography
- Specific laboratory tests.
- Amniocentesis.
- Fetoscopy.
- Hysteroscopy.
- MRI.
- Surgical diathermy.
- Cryosurgery.

Procedures assisted

- Medical termination of pregnancy,
- Operative delivery
- Abnormal deliveries-Forceps application, Ventouse, Breech
- Exchange blood transfusion

- Culdoscopy.
- Cystoscopy
- Tuboscopy
- Laparoscopy.
- Endometrial Biopsy
- Tubal patent test
- Chemotherapy
- Radiation therapy
- Dilatation and Curettage

Procedures performed

- Antenatal assessment-20
- Postnatal assessment-20
- Assessment during labour : use of partograph - 20
- Per vaginal examination-20
- Conduct of normal delivery-20
- Episiotomy and suturing-10
- Setting up of delivery areas
- Insertion of intra uterine devices(copper T)
- History taking.
- Physical Examination-General
- Antenatal assessment. – 20
- Pelvic examination
- Assessment of risk status.
- Assessment of Intra uterine foetal well-being.kick chart and foetal movement chart, Doppler assessment, Non Stress Test, Contraction stress test (Oxytocin challenge test)
- Universal precautions- Disposal of biomedical waste.
- Per Vaginal examination and interpretation (early pregnancy, labour, post partum).
- Utilization of Partograph
- Medical & Surgical induction (Artificial rupture of membranes).
- Vacuum extraction
- Conduct of delivery.
- Prescription and administration of fluids and electrolytes through intravenous route.
- Application of outlet forceps, delivery of breach – Burns Marshall, Loveset manoeuvere
- Repair of tears and Episiotomy suturing.
- Vacuum extraction
- Controlled cord traction, Manual removal of placenta, placental examination,
- Manual vacuum aspiration
- Postnatal assessment.- 20
- Management of breast engorgement
- Thrombophlebitis (white leg)
- Postnatal counseling.

- Reposition of inversion of uterus.
- Laboratory tests: Blood- Hb, Sugar, Urine-albumin,sugar
- Breast care, breast exam, and drainage breast abscess.
- Postnatal exercise.
- Setting of operation theatre.
- Trolley and table set up for Obstetrical & gynaecoligical operations.
- Cervical & vaginal cytology-Pap smear,Vaginal smear.
- Insertion of pessaries,
- Insertion of IUD and removal.
- Assessment –New born assessment; physical and neurological, Apgar score, high-risk newborn, Monitoring neonates; Clinically and With monitors, Capillary refill time, Assessment of jaundice, danger signs
- Anthropometric measurement
- Neonatal resuscitation
- Gastric Lavage
- Care of newborn in multi channel monitor and ventilator.
- Care of newborn in radiant warmer and incubator.
- Kangaroo mother care.
- Assisting mother with exclusive Breast-feeding
- Feeding technique: Katori, spoon, naso/orogastric, Total Parenteral nutrition
- Assessement, calculation and administration of fluids and medications:
  - Oral
  - I.D.
  - I.M.
  - I.V.- Securing IV line, infusion pump
- Administration of drug per rectum
- Capillary blood sample collection.
- Oxygen therapy.
- Phototherapy.
- Chest physiotherapy.
- Counseling – Parental, bereavment, family planning, infertility etc
- Teaching skills
- Communication skills
- Prepare referral slips
- Pre transport stabilization
- Networking with other stake holders

Others

- Identification of high risk women and referral
- Health education: to women and their families
- Motivation of couples for planned parenthood

T. DILEEP KUMAR, President

[ADVT-III/IV/102/07/Exty.]

Printed by the Msanager, Govt. of India Press, Ring Road, Mayapuri, New Delhi-110064
and Published by the Controller of Publications, Delhi-110054.